ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

मूल्यः ₹ 20

वर्ष : 32 पौष-माघ वि0स0 2076 अंक : 1 जनवरी 2020

मुद्रकः सरस्वती प्रेस, देहरादून

वजनः 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

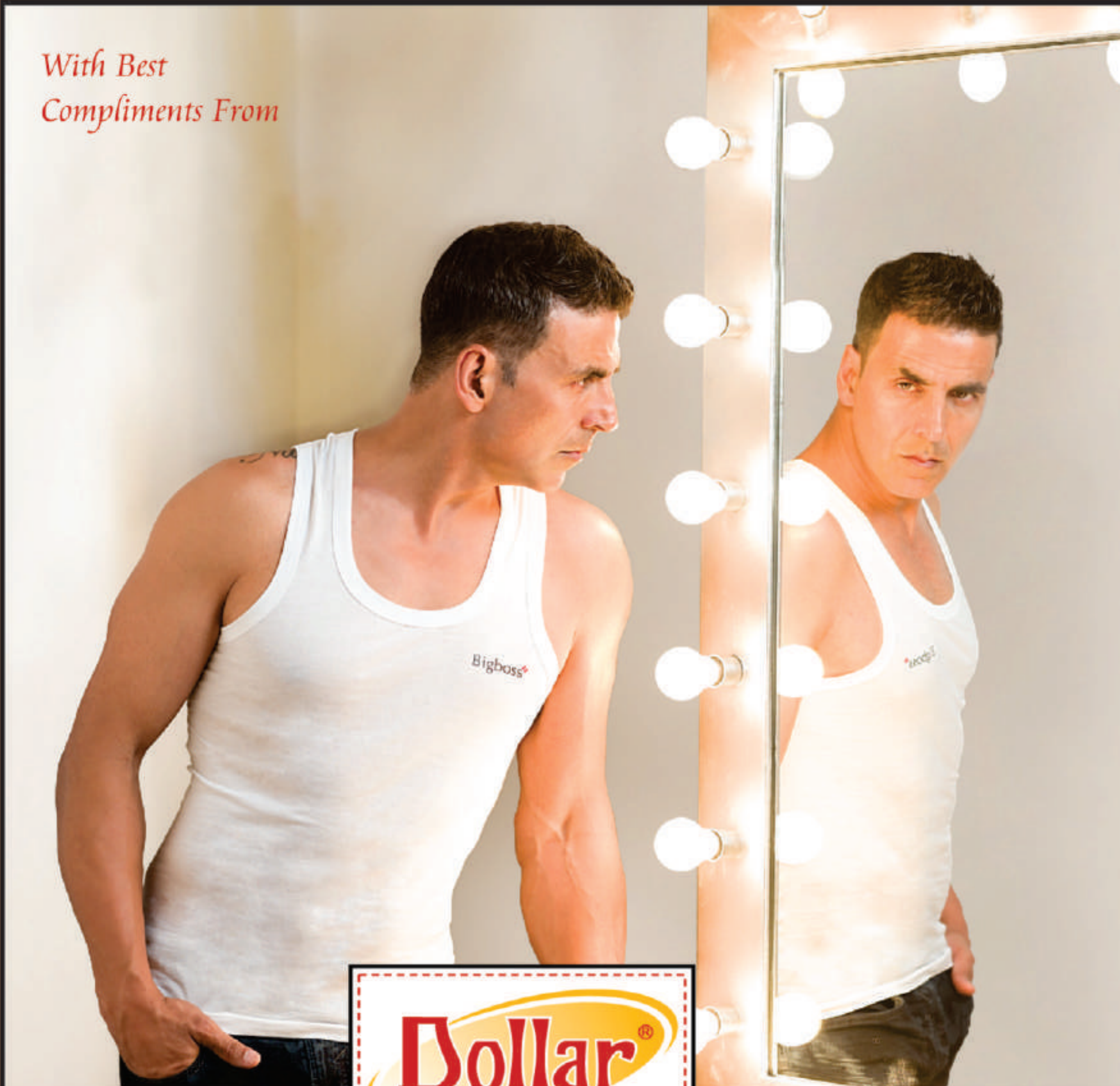

Dollar®

Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

Fit Hai Boss

www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–32 अंक–1

पौष–माघ 2077 विक्रमी जनवरी 2020

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120 दयानन्दाब्द : 195

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 7310641586

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकार	3
बौद्धधर्म के सिद्धान्तों का मूल स्रोत वेद	डॉ० कृष्णकांत वैदिक शास्त्री	4
स्वाध्याय सबके जीवन का आवश्यक अंग	मनमोहन कुमार आर्य	8
वेदज्ञान की उपेक्षा क्यों?	मनमोहन कुमार आर्य	11
सीता जी को राम की अँगूठी देना	ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी	16
पायरिया से बचाव	डा० सरला डंग जी	20
होम्योपैथिक उपचार	डॉ० राजेन्द्र सिंह	22
शील	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	24
उपासना की आवश्यकता	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	26
गुरुकुल पौंधा महोत्सव	मनमोहन कुमार आर्य	28
गुरुकुल उत्सव में अभिनन्दन समारोह	मनमोहन कुमार आर्य	29
दानदाताओं की सूची		30

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1. वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष) — रु. 200/– वार्षिक
2. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य — रु. 2000/–

नोट: पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

स्वाध्याय की महिमा

स्वाध्याय शब्द का अर्थ है– उत्तम रीति से आद्योपांत और अधिकृत रूप से सब ओर पहुंचना अर्थात् व्यक्ति द्वारा उत्तमता से ग्रन्थ के आरम्भ से अन्त तक अधिकारपूर्वक सर्वतः प्रवेश स्वाध्याय है। स्वाध्याय के अर्थ पर विचार करते हुए हम पाते हैं कि यह आद्योपांत वह प्रवाह है जिसमें पठन, मनन और निदिध्यासन निरन्तर साथ–साथ चलता रहता है। 'सु' उपसर्ग का अर्थ है, ऐसा अध्ययन जो सबसे पूजित और सम्मानित हो। हर किसी ग्रन्थ को पढ़ लेना स्वाध्याय नहीं है। अध्याय शब्द वेदवाचक है, अतः वह अध्ययन ही स्वाध्याय कहलाएगा जिसमें वेदों का अध्ययन सम्मिलित हो। हम स्वाध्याय शब्द का विग्रह स्वस्य अध्याय करें तो इसका अर्थ होगा, अपना अध्ययन, आत्म निरीक्षण और आत्मचिन्तन। तैतिरीय उपनिषद् के अनुसार आचार्य दीक्षान्त भाषण में शिष्यों को उपदेश देते हैं, स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद मत करना। स्वाध्याय को मात्र श्रम ही नहीं परमश्रम माना गया है। परमतप माना गया है। छान्दोग्य उपनिषद् के ऋषि द्वारा धर्म के तीन स्कन्ध– यज्ञ, अध्ययन और तप माने गए हैं।

पतंजलि ने स्वाध्याय को परम योग कहा है। शतपथ कार और याज्ञवल्क्य ने स्वाध्याय को ब्रह्मयज्ञ कहा है। स्वाध्याय से मनुष्य में अन्तर्मख होने की प्रवृत्ति जागृत होती है, जिससे उसमें आत्मबोध उत्पन्न होता है और अपनी सीमाओं से विमुक्त होकर वह लोकोपकार की ओर अग्रसर होता है। स्वाध्याय से व्यक्ति शतपथकार के अनुसार 'युक्तमना भवति' अर्थात् समहित मन वाला या स्थिर चित्त होता जाता है। स्वाध्यायी व्यक्ति पराधीन नहीं रहता। स्वाध्यायशील व्यक्ति में महात्मा विदुर के अनुसार उन्निद्र रोग का प्रक्षालन हो जाने से वह वास्तविक सुख की नींद सोता है। याज्ञवल्क्य के अनुसार स्वाध्यायशील व्यक्ति 'आत्मनः परमचिकित्सकः भवति' अर्थात् वह अपनी चिकित्सा करना जान जाता है। स्वाध्याय से व्यक्ति मेधावी बनता है और उसकी इन्द्रियां विषयाभिमुख हो जाती हैं, जिससे वह इन्द्रियों को वश में कर लेता है। स्वाध्यायशील व्यक्ति को ऐसा आराम प्राप्त होता है जो अद्वितीय हो, जिसकी उपमा न हो। स्वाध्याय–श्रम से प्रज्ञा–वृद्धि हो जाने से सभी सिद्धियां आ विराजती हैं। आर्यसमाज के सिद्धान्तों में पुरुषार्थ चतुष्टय का अत्यंत महत्त्व है। धर्म, अर्थ, काम ओर मोक्ष ये चार 'पुरुषार्थ चतुष्टय के नाम से जाने जाते हैं। मोक्ष को परम पुरुषार्थ भी कहते हैं। समस्त वेद, शास्त्र आदि का स्वाध्याय करने के बाद ऋषि और मुनियों ने अन्त में बिना मतभेद के एक स्वर से यही अटल सिद्धान्त सुस्थिर कर दिया है कि सांसारिक दुःखरूपी प्रचण्ड सूर्य के ताप से जिनका अन्तःकरण सन्तप्त हो रहा है, उन पुरुषों को मोक्षरूपी कल्पवृक्ष की शीतल छाया को छोड़कर और कहां सुख मिल सकता है?इसलिए मोक्ष ही समस्त पुरुषार्थों ओर सुखों का सम्राट् है। इसकी प्राप्ति किसी–किसी विरले भाग्यशाली ही को हो पाती है। अधिकांश लोगों के लिए तो यह आदर्श मात्र है। इसको पाने के लिए स्वाध्याय परम आवश्यक साधन है। आर्यसमाज के विचारों को मानने वालों के लिए स्वाध्याय करना बहुत आवश्यक कार्य है। बिना ज्ञान में वृद्धि किए व्यक्ति धर्म और दर्शन के मूल तत्त्वों को नहीं जान सकता है। इसलिए हमें निरन्तर स्वाध्यायशील बना रहना चाहिए। सुधी पाठकों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

ओ३म्

अतिथि–यज्ञ

त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं, वर्मे व स्यूतं परिपासि विश्वतः।
स्वादुक्षद्मा यो वसतौ स्योनकृज्, जीवयाजं यजते सोमपा दिवः।।

ऋग्वेद 1.31.15

ऋषिः हिरण्यस्तूपः आंगिरसः। देवता अग्निः। छन्दः विराड् जगती।

(अग्ने) हे तेजस्वी परमेश्वर! **(त्वं)** तू **(प्रयतदक्षिणं)** पवित्र दक्षिणा देनेवाले **(नरं)** मनुष्य को **(स्यूतं)** सिले हुए **(वर्म इव)** कवच के समान **(विश्वतः)** सब ओर से **(परिपासि)** परिरक्षित करता है। **(स्वादु–क्षद्मा)** स्वादु भक्ष्य और पेय वाला **(स्योनकृत्)** [अतिथियों को] सुख देने वाला **(यः)** जो **(वसतौ)** घर में **(जीवयाजं यजते)** अतिथि–यज्ञ करता है, **(सः)** वह **(दिवः उपमा)** द्यु–लोक के समान [हो जाता है]।

जब हमें शत्रु के आयुधों से अपने शरीर की रक्षा करनी अभिप्रेत होती है, तब हम सिला हुआ अभेद्य कवच शरीर पर धारण कर लेते हैं। उस कवच से टकराकर वैरी के बाण, भाले आदि शस्त्रास्त्र कुंठित हो जाते हैं। यहां वेद मनुष्य को एक अन्य कवच धारण करने की प्रेरणा कर रहा है, वह है दक्षिणा का कवच। हे अग्ने! हे तेजःस्वरूप परमात्मन्! तुम दक्षिणा देने वाले नर की वैसे ही सब ओर से रक्षा करते हो जैसे कवच रक्षा करता है। पर कवच यदि ठीक प्रकार सिला हुआ तथा सुदृढ़ न हो, तो वह धारण– कर्त्ता की रक्षा करने के स्थान पर स्वयं शत्रु के प्रहार से क्षत– विक्षत हो सकता है। इसी प्रकार दक्षिणा भी यदि पवित्र न हो तो वह दाता की रक्षा का साधन नहीं बनती। दक्षिणा में जो भोजन, वस्त्र, धन आदि दिया जा रहा है, वह शुभ साधनों से अर्जित हो तथा प्रसन्नतापूर्वक कर्तव्य मानकर दिया जा रहा हो, ऐसी पवित्र दक्षिणा ही चारों ओर के विघ्नों से दाता की रक्षा करती है।

गृहागत अतिथि का सत्कार करना भी वैदिक मर्यादा के अनुसार गृहस्थ का एक आवश्यक कर्तव्य है। अतएव नैत्यिक पंच–यज्ञों में अतिथि–यज्ञ भी परिगणित किया गया है। जो अतिथि के घर आने पर स्वादु भोज्य, पेय आदि से सत्कृत कर उसे सुख देता है और जीवनपर्यन्त अतिथि–यज्ञ करता रहता है, वह द्यु–लोक के समान उन्नत और प्रकाशमान हो जाता है। श्रुति कहती है कि विद्वान् व्रतनिष्ठ अतिथि जिसके घर आये, वह स्वयं उसकी सेवा में उपस्थित होकर कुशल–क्षेम एवं उसकी आवश्यकताओं के विषय में पूछे। यहां तक कि यदि वह अग्निहोत्र करने के लिए तैयार हो और उस समय अतिथि आ जाए, तो वह अग्निहोत्र छोड़कर पहले अतिथि की सेवा में पहुंचे और उसकी स्वीकृति लेकर ही अग्निहोत्र के लिए बैठे।

हे सब यज्ञों के आदर्श अग्निस्वरूप परमेश्वर! तुम हमें भी दक्षिणा और अतिथि–यज्ञ के लिए सदैव प्रेरित करते रहो, जिससे हम भी एक दिन द्युलोक के सदृश उच्च, उदार, विशाल, प्रकाशमान और प्रकाशक होने के गौरव को प्राप्त कर सकें।

(सामवेद के संस्कृत–हिन्दी भाष्यकार एवं अनेक वैदिक ग्रन्थों के लेखक आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकृत की पुस्तक वेद–मंजरी से साभार)

बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का मूल स्रोत वेद

—डॉ० कृष्णकांत वैदिक शास्त्री

बुद्ध के आगमन के पूर्व भारत का इतिहास अंधकार पूर्ण रहा है। वेद और उपनिषदों का शुद्ध और आदर्श धर्म मृतप्राय होकर बिना अर्थों वाले कर्मकाण्ड और बोझीले संस्कारों के रूप में विकृत हो चुका था। वैदिक वर्ण—व्यवस्था जो मूलरूप से श्रम और गुणवत्ता पर आधारित थी अब परिवर्तित हो गई थी। वे आरामतलब और मूर्तिपूजक बन गये थे। इसके स्वाभाविक परिणामस्वरूप ब्राह्मण जो केवल जन्म के आधार पर सम्मान पाने में अपने को सुरक्षित मानने लगे थे वेदों के अध्ययन और सद्‌गुणों के आचरण से विमुख हो गये थे।

यह धार्मिक और नैतिक विकृति केवल ब्राह्मणों तक ही सीमित नहीं रही अपितु अन्य जातियों में भी फैल गई। सन्यासियों में अब धार्मिक ज्ञान, आन्तरिक पवित्रता और नम्रता की भावना नहीं रही और वे अपनी सिद्धियों के अभ्यास का केवल दिखावा करने लगे। सामान्य लोग भी अब पूर्व के वैदिक काल की भाँति साधारण, पवित्र और गुणी नहीं रहे। यह गिरावट केवल ब्राह्मणों मे ही नहीं आई अपितु सभी वर्णों के लोग मूर्तिपूजा आदि सभी प्रकार के देवी—देवताओं की पूजा करने लगे और यज्ञों में पशुबलि होने लगी। धर्म के पवित्र नाम पर मासूम पशुओं की बलि से रक्त बहाये जाने से बुद्ध के कोमल हृदय पर आघात पड़ा जिससे उनकी आत्मा विद्रोह पर उतारू हो गई। शूद्रों, जिन्हें कोई धार्मिक ज्ञान नहीं था और जिनका समाज में कोई आदर न था, की स्थिति और भी भयावह थी, वे केवल अपने इन बन्धनों को तोड़ कर आजाद होना चाहते थे। विशाल हृदय के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य भी इनकी भावनाओं से सहानभूति रखते थे। इस प्रकार सामाजिक क्रान्ति के लिए उचित समय आ चुका था। प्रताड़ित किये गये शूद्र वर्ग को उत्सुकता से अवसर की प्रतीक्षा थी। उसने अन्य द्विजों के साथ उत्साह से बौद्ध धर्म अंगीकार किया। बौद्धमत की मुख्य शिक्षाएँ निम्न प्रकार हैं :— १—चार आर्य सत्य— (१) दुःख (२) दुःख की उत्पत्ति (३) दुःख का विनाश (४) दुःख का उपशमन करने वाला अष्टांगिक मार्ग। २—महात्मा बुद्ध की शिक्षा का सारांश— सारे पापों का न करना, कुशल धर्मों अर्थात् पुण्यों का संचय करना और अपना चित्त परिशुद्ध रखना यही बुद्ध की शिक्षा है। बुद्ध की शिक्षा संक्षेप में निम्न हैं:—(१) निन्दा न करना। (२) हिंसा न करना। (३) आचार नियम द्वारा अपने को संयत रखना। (४) मित भोजन करना। (५) एकान्त में वास करना। (६) चित्त को योग में लगाना। बौद्धमत में महामंगल— महात्मा बुद्ध द्वारा मंगल सूत्रों में मंगलों का उत्तम उपदेश दिया गया है जो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—(१) मूर्ख लोगों का संग न

करना, विद्वानों का सत्संग करना, पूजनीय व्यक्तियों की पूजा करना उत्तम मंगल है। (२) उपयुक्त देश में वास, पुण्याचरण और अपने मन में सम्यक् प्रणिधान या शुभ संकल्प करना उत्तम मंगल है। (३) बहुश्रुत होना (शास्त्रों का खूब ज्ञान होना) शिल्प विद्याओं का जानना, विनय (चरित्र गठन) में सुन्दर रूप से शिक्षित होना और सुन्दर वचन बोलना उत्तम मंगल है। (४) माता–पिता की सेवा करना, स्त्री व पुत्रों का पालन पोषण करना और पाप रहित व्यवसाय करना उत्तममंगल है। (५) दान देना (कर्म, वचन और मन से) धर्म का आचरण करना, अपने कुटुम्ब वालों का पालन करना और निर्दोष कार्यों का करना उत्तम मंगल है। (६) मानसिक पापों में अराति (अनासक्ति) शारीरिक और वाचिक पापों से विरति (अनासक्ति) शारीरिक और वाचिक पापों से विरति (परित्याग) मद्यादि पान में संयम अर्थात् मदिरा, भांग, गांजा आदि नशे की वस्तुओं से बचना ओर धर्म में प्रमाद न करना उत्तम मंगल है। (७) पूजनीय व्यक्तियों में गौरव रखना, उन लोगों के निकट विनीत रहना, सदा सन्तुष्ट रहना, कृतज्ञता अर्थात् कोई अपने साथ कुछ उपकार करे तो उसका ख्याल रखना, उचित समय से धर्म का सुनना उत्तम मंगल है। (८) क्षमाशील होना गुरुजनों के आदेशों का पालन करना, श्रमणों (महात्माओं) के दर्शन करना ओर यथा समय धर्मचर्या करना उत्तम मंगल है। (९) तपस्या, ब्रह्मचर्य का पालन करना, आर्य सत्य का प्रत्यक्ष करना और निर्वाण का साक्षात्कार करना उत्तम मंगल है।(१०) लाभ, अलाभ, यश, अपयश, निन्दा, प्रशंसा ओर सुख–दुःख इन आठ प्रकार के लोकधर्मों के द्वारा चित्त का विचलित न होना तथा शोकरहित होना, राग, द्वेष और मोह रूपी रज से रहित होना ओर क्षेम सहित होना उत्तम मंगल है। (११) ऊपर जिन अड़तालीस मंगल कार्यों की बात कही गई है। उनसे सर्वत्र जय और मंगल प्राप्त होता है। यही सबके लिए उत्तम मंगल है। पंचशील– महात्मा बुद्ध ने शील व सदाचार की प्रशंसा करते हुए सर्वसाधारण के लिए निम्नलिखित पंचशीलों का उपदेश किया हैः–(१) मैं प्राणि हिंसा से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (२) मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (३) मैं पर स्त्री गमनादि नीति विरुद्ध कामाचार से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (४) मैं झूठ से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (५) मैं सुरामेरय (शराब) आदि मादक द्रव्यों के सेवन तथा प्रमाद के स्थान जुए आदि से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।एकादश शीलः–पंचशील के अतिरिक्त एकादश शीलों का भी बौद्ध ग्रन्थों में वर्णन आता है जो निम्न हैंः–(१) मैं प्राणि हत्या से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (२) मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (३) मैं पर स्त्री गमनादि नीति विरुद्ध कामाचार से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (४) मैं शराब, ताड़ी, गांजा, भांग इत्यादि नशों से तथा प्रमाद के स्थान जुए आदि से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। वाचिक सुचरित–(५) मैं मिथ्या वचन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (६) मैं चुगली

से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (७) मैं कटु वचन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (८) मैं मिथ्या वचन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। मानसिक सुचरित–(६) मैं लोभ से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (१०) मैं क्रोध से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। (११) मैं उच्छेदवाद और शाश्वतवाद आदि मिथ्या दृष्टियों से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। इन ग्यारह शीलों में पाँच तो वही हैं जिनका पंचशीलों में उल्लेख है। ब्रह्मविहार भावना–महात्मा बुद्ध ने जिन भावनाओं का विशेष रूप से उपदेश किया है और जिन्हें ब्रह्म प्राप्ति का साधन बताया है, 'बौद्धचर्या पद्धति' के लेखक भदन्तबोधानन्द महास्थविर ने उनकी संक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार की है–''ब्रह्म या ब्रह्मा लोग जिस भावना या ध्यान में विहार करते हैं उसे ब्रह्मविहार भावना कहते हैं। ब्रह्म या ब्रह्मा के समान जो लोग भावना या ध्यान में लीन रहते हैं उनको ब्रह्मभूत, ब्रह्मविहारी या ब्रह्मचारी कहते हैं।'' यह भावना चार प्रकार की है– (१) मैत्री (२) करुणा (३) मुदिता (४) उपेक्षा (१) मैत्री भावना भी चार प्रकार की है–(क) सब प्राणी शत्रु रहित हों। (ख) सब प्राणी विपद रहित हों। (ग) सब प्राणी रोग रहित हों।(घ) सब प्राणी सुख से रहें। (२) करुणा भावना एक प्रकार की है–सब प्राणी सदा दुःख रहित हों। (३) मुदिता भावनाएक प्रकार की है– सब प्राणी अपने सत्कर्म द्वारा प्राप्त सुख से वंचित न हों। (४) उपेक्षा भावना एक प्रकार की है– सब प्राणियों का अपना शुभाशुभ कर्म ही सच्चा साथी है दूसरा कोई नहीं।

वैदिक सिद्धान्तों और मान्यताओं से बौद्धमत की मान्यताओं की तुलना– बौद्धमत में पंचशील और एकादश शील का उल्लेख है इनका सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह से सीधा सम्बन्ध है। शेष का भी मनुस्मृति, योगदर्शन, भगवद्गीतादि प्राचीन शास्त्रों से लिया जाना स्पष्ट है। उदाहरण के लिए मनुस्मृति में कहा गया है–सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम। प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः।। मनुष्य को सत्य बोलने, प्रिय वचन बोलने, सत्य को भी अप्रिय रूप से न बोलने और असत्य बात प्रिय होने पर भी न बोलने की शिक्षा दी गई है। वेद की सात मर्यादाएँ और ऋग्. (१०/३४/१३) अक्षैर्मा दीव्यः अर्थात् जुआ मत खेलो से ही महात्मा बुद्ध के पंचशील और एकादश शील लिए गए हैं। अतः इन उपदेशों के उत्तम होते हुए भी इनमें कोई मौलिकता और नवीनता नहीं है। वे प्रचीन आर्य शिक्षाओं के ही अनुवाद मात्र हैं। बौद्धमत के ब्रह्मविहार– इसमें (१) मैत्री (२) करुणा (३) मुदिता (४) उपेक्षा का उल्लेख किया गया है। वैदिक सिद्धान्तों में योगदर्शन के साधनपाद का ३३ वाँ सूत्र इस विषय में अत्यन्त स्पष्ट है– 'मैत्रीकरुणा मुदितोपेक्षाणां, सुखादुःखापुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्।।' योगदर्शन के इस सूत्र की भोज वृत्ति में कहा गया है कि सुख युक्त सब प्राणियों में मैत्री व मित्रता की भावना

रखे, अच्छा है कि ये सुखी हैं, इस प्रकार की मित्रता की भावना, न कि ईर्ष्या। करुणा से तात्पर्य कृपा है अर्थात् दुखिःतों को देखकर इनके दुःख की निवृत्ति किस प्रकार हो यही भावना रखें, न कि उदासीनता की, कि हमें क्या मतलब? किसी को पुण्य का कार्य करते हुए देखकर उसका अनुमोदन करे ओर हर्ष प्रकट करे न कि द्वेष, ये क्यों पुण्य कर्म करते हैं। अपुण्य या पाप करने वालों के प्रति भी उदासीनता की भावना करे अर्थात् न अनुमोदन और न द्वेष। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इन बातों को महात्मा बुद्ध ने योगदर्शन के अतिरिक्त यदि वेदों से भी लिया हो तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। ललित विस्तार नामक महायान सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध महात्मा बुद्ध के जीवन चरित्र में स्पष्ट लिखा है कि बुद्ध ने नियमपूर्वक ब्रह्मचारी बनकर वेदों का अध्ययन किया था। अष्टांग मार्ग और वैदिक कर्तव्यशास्त्र–महात्मा बुद्ध ने जिस अष्टांग मार्ग का प्रतिपादन किया है उसका आधार वैदिक कर्तव्यशास्त्र में पाया जाता है। ऋग्वेद(१०/९०/१८) में सम्यग् दर्शन के यथार्थ ज्ञान की महिमा बताते हुए कहा गया है 'तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।' अर्थात्परमात्मा का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करके ही मनुष्य मृत्यु से पार हो सकता है, इसका अन्य कोई उपाय नहीं है। अष्टांगिक मार्गमें 'सम्मा सति' और 'सम्मा समाधि' के नाम से स्मरण किया गया है जिसके लिए वेद में अनेक मन्त्र पाये जाते हैं। जैसे–पवमानःसो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणि। यः पोता स पुनातु नः।। (ऋ0 /६७/ २२) पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते। (साम0 पू0 ३/७/६) पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे। अथे अरिष्ट तातये।। (अथ0 ६/६६) चित्पिर्मा पुनातु वाक् पतिर्मा पुनातुतस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्। (यजु0 ४/४) बुद्ध के सम्मा संकल्प का आधार यजु0 34 के छः मन्त्र हैं जिनमें 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।'पर बल देते हुए प्रार्थना की गई है। 'सम्मावाचा' के लिए अथर्ववेद (५/७/४) का मन्त्र 'वाचं जष्टामवादिषं देवानां देवहूतिषु' है। 'सम्माकम्मन्त' के लिए 'परि माग्रे दुश्चरिताद्बाधस्वा मा सुचरिते भज।' (यजु0 ४/२८) उपरोक्त वेद मन्त्रों में सदा पवित्र क्रतु (संकल्प), पवित्र वाणी, पवित्र चित्त, रखने का उपदेश है जिससे शुद्ध विचार, स्मृति व समाधि का अन्तर्भाव हो जाता है। शुद्ध समाधि वैदिक कर्त्तव्य शास्त्र के अनुसार पवित्रता के स्रोत परमेश्वर का ध्यान करने से ही प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि बौद्ध कर्त्तव्य शास्त्र के उपदेशों का आधार प्राचीन आर्य ग्रन्थ, वेदों से सिद्ध होता है। वैदिक सिद्धान्तों में उल्लिखित बहुत से बिन्दुओं, जैसे–अहिंसा, सत्य, स्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तपः आदि बौद्धमत में भी पूर्ण रूप में या परिवर्तित–परिवर्धित रूप में पाये जाते हैं जिनका आदि मूल वेदों में पाया जाता है। अतः हम उपरोक्त विवेचन के आधार पर निःसंकोच कह सकते हैं कि बौद्ध धर्म में भले ही वैदिक धर्म से कुछ भिन्नताएं पायी जाती हों परन्तु उनका मूल स्रोत वेदों में ही सिद्ध होता है।

प्रतिदिन स्वाध्याय सबके जीवन का आवश्यक अंग होना चाहिए

–मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य की आत्मा अनादि, नित्य, अजर, अमर, सूक्ष्म, ससीम, जन्म–मरणधर्मा, कर्म के बन्धनो में बंधी हुई, वेद ज्ञान प्राप्त कर उसके अनुसार कर्म करते हुए मोक्ष को प्राप्त होने वाली एक चेतन सत्ता है। चेतन सत्ता में ज्ञान एवं प्रयत्न गुण होता है। जीवात्मा एकदेशी होने से अल्पज्ञ होता है। इसको सुख व मोक्ष प्राप्ति के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान प्राप्ति के मुख्य साधन तो माता, पिता व आचार्य होते हैं। इसके साथ ही मनुष्य स्वाध्याय द्वारा धर्म–अधर्म तथा कर्तव्य व अकर्तव्य सहित अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश सहित अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इन ग्रन्थों में वेद वा वैदिक मान्यताओं का प्रकाश है। ईश्वर का सत्यस्वरूप तथा उपासना क्यों, किसकी व कैसे करनी चाहिये, इसका बोध भी ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से होता है। अतः वेद, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत तथा ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के अध्ययन सहित अन्यान्य वैदिक विद्वानों के ग्रन्थों का अध्ययन से मनुष्य अपने ज्ञान में वृद्धि कर निःशंक वा निर्भ्रान्त हो सकता है। ऐसा करना इस लिये आवश्यक है कि उसे अपने धर्म व कर्तव्य का बोध हो सके और वह अज्ञानी, चतुर, चालाक व स्वार्थी लोगों से धर्म पालन विषय में ठगे जाने से बच सके। उसका जीवन सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग का एक उदाहरण बन जाये और वह धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के मार्ग पर चलता हुआ अपनी आत्मा की उन्नति करने सहित जन्म–जन्मान्तरों में कल्याण को प्राप्त हो सके।

स्वाध्याय शब्द 'स्व' अर्थात स्वयं का अध्ययन करने को कहते हैं। स्व अर्थात् अपनी आत्मा और शरीर का ज्ञान जो हमें माता–पिता तथा आचार्य दे सकते हैं। वर्तमान में सभी माता–पिता व आचार्य इतने ज्ञानी नहीं है कि वह अपनी सन्तानों व शिष्यों की इस आवश्यकता की पूर्ति कर सकें। इसके लिये आर्यसमाज का सदस्य बनकर और वहां रविवार को होने वाले सत्संग, वार्षिकोत्सव तथा आर्यसमाजों की सभाओं व संस्थाओं सहित गुरुकुलों में होने वाले उत्सवों में भाग लेकर वहां विद्वानों के उपदेशों को सुनकर तथा विद्वानों से शंका–समाधान करके ईश्वर, आत्मा व धर्म–अधर्म, उपासना, अग्निहोत्र यज्ञ तथा सामाजिक नियमों आदि सभी प्रकार का ज्ञान ग्रहण किया जा सकता है। कुछ विषय जटिल होते हैं जिसके लिये हमें उन विषयों के ग्रन्थों को पढ़ कर समझना होता है। स्वाध्याय में हम वेदों सहित योग्य विद्वानों के ग्रन्थों का अध्ययन कर विद्वान बन सकते हैं और निर्भ्रान्त होकर अपने अन्य बन्धुओं में भी ज्ञान का प्रचार व प्रसार कर सकते हैं। आर्यसमाज के सक्रिय एवं स्वाध्यायशील सदस्यों का धर्म अधर्म तथा कर्तव्य–अकर्तव्य सहित धार्मिक एवं सामाजिक विषयों का ज्ञान अन्य समानधर्मी संस्थाओं से अधिक होता है। इसका कारण यह है कि आर्यसमाज में प्रत्येक सप्ताह विद्वानों के प्रवचनों सुनने को मिलते है और निजी जीवन

में वेदादि अनेक ग्रन्थों का नियमित स्वाध्याय किया जाता है। अन्य मतों व संस्थाओं में अपने ही धर्म गुरुओं की पुस्तकों का अध्ययन कराया जाता है। उन ग्रन्थों में लिखी बातों की सत्यासत्य की परीक्षा नहीं की जाती। उनमें जो सत्य व असत्य लिखा है, उसे ही स्मरण करना व मानना होता है। शंका–समाधान को वहां बुरा माना जाता है। इस कारण अन्य मतों के अनुयायी अनेक प्रकार के अज्ञान, अन्धविश्वासों व पाखण्डों से युक्त होते हैं। आर्यसमाज का नियम ही है कि सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। अतः आर्यसमाज में मनुष्य को सत्य का ज्ञान प्राप्त करने की सबसे अधिक सुविधा है। ईश्वर का सच्चा व तर्कसंगत स्वरूप केवल वेदों के विद्वान व उनके अनुयायी आर्यसमाज के अनुयायी ही जानते, मानते व उसका प्रचार करते हैं। वेद वर्णित अग्निहोत्र–यज्ञ को भी आर्यसमाज के विद्वानों ने ही तर्क और युक्ति की कसौटी पर कसकर अपनाया है व इसका प्रचार भी वह करते हैं। यज्ञ करने वाले मनुष्य को उसके लाभों का स्वयं अनुभव करने व जानने का अवसर मिलता है और वह यज्ञ करके सन्तुष्ट व प्रसन्न देखे गये हैं।

स्वाध्याय से मनुष्य अज्ञान से मुक्त होता है व ज्ञानी बनता है। अज्ञान दूर होने से मनुष्य दुराचार की हानियों को जानकर उनसे भी पृथक होता है। वह सदाचार को अपना साध्य मानकर उसके अनुरूप आचरण करता है। वेद व वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय से मनुष्य ईश्वर, माता–पिता, आचार्यों सहित देश व समाज का भक्त व हितकारी बनता है। स्वाध्याय मनुष्य को सच्चे ईश्वर का उपासक भी बनाता है। स्वाध्याय करने वाला अपने सभी मित्रों, सम्बन्धियों तथा सामजिक बन्धुओं के प्रति अपने कर्तव्यों को जानकर उनसे सत्य का व्यवहार करता है। इससे समाज में अन्धविश्वास एवं पाखण्ड दूर होने के साथ समाज में किसी प्रकार का भेदभाव व मिथ्या परम्परायें उत्पन्न नहीं होती तथा जो अन्ध–परम्परायें अस्तित्व में होती हैं वह स्वाध्याय से अर्जित ज्ञान व आत्म–चिन्तन की प्रक्रिया से दूर हो जाती हैं। स्वाध्यायशील मनुष्य समाज के सभी लोगों का उनकी सभी समस्याओं के निवारण में मार्गदर्शन कर सकता है। मनुष्य अपने स्वास्थ्य और व्यवसाय की समस्याओं को किस प्रकार से हल कर सकता है, स्वाध्यायशील व्यक्ति इसका भी सुझाव अपने साथियों को दे सकता है। ज्ञान एवं पुरुषार्थ से युक्त मनुष्य कोई भी कार्य करेगा तो उसमें उसको निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। अतः स्वाध्याय से अनेक लाभ मनुष्य प्राप्त कर सकता है। जीवन भर स्वाध्याय से जुड़े रहना चाहिये। सभी मनुष्यों को एक निश्चित समय प्रतिदिन, दो–तीन घण्टे या अधिक, स्वाध्याय में लगाने चाहिये। इसके शुभ परिणाम शीघ्र सामने आते हैं।

स्वाध्याय क्यों करना चाहिये? स्वाध्याय अज्ञान को दूर करने तथा ज्ञान की प्राप्ति के लिये किया जाता है। स्वाध्याय आत्म–चिन्तन को भी कहते हैं। स्वाध्याय और सन्ध्या में परस्पर समानता है। स्वाध्याय में हम अनेक विषयों का प्रामाणिक अध्ययन पुस्तकों तथा आत्म–चिन्तन व मनन के द्वारा करते हैं। सन्ध्या ईश्वर के ध्यान व चिन्तन–मनन को कहते हैं। स्वामी दयानन्द जी ने सन्ध्या की विधि की पुस्तक भी लिखी हैं। इसमें हमें आत्मा और परमात्मा विषयों का वेदादि ग्रन्थों के स्वाध्याय सहित विद्वानों के प्रवचनों व उनसे वार्तालाप से ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसके अनुरूप ईश्वर के

मुख्य नाम ओ३म् तथा गायत्री मन्त्र का जप करते हुए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना से सम्बन्धित वेदमन्त्रों के अर्थों पर विचार करते हुए ईश्वर के स्वरूप में प्रविष्ट व उसमें स्थिर होने का प्रयास करते हैं। ऐसा करने से आत्मा पर पड़े अज्ञानरूपी मल, विक्षेप व आवरण कटते हैं और आत्मा में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न होता है। अभ्यास करते हुए ईश्वर के ध्यान में अपने मन को स्थिर रखने का प्रयत्न करते हुए मन की एकाग्रता की स्थिति के अनुरूप लाभ होता है। ऐसा करने से ईश्वर का प्रत्यक्ष हो सकता है। वेद में उपासक ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना करते हुए कहता है कि वह महानतम पुरुष ईश्वर को जानता है। वह ईश्वर सूर्य के समान प्रकाशमान है तथा अन्धकार से सर्वथा पृथक व दूर है। उस ईश्वर को जानकर ही हम अपनी मृत्यु से पार मोक्ष सुख को प्राप्त कर सकते हैं। अतः स्वाध्याय से प्राप्त ज्ञान के क्रियात्मक रूप को सन्ध्या कह सकते हैं। स्वाध्याय से हमें जो ज्ञान प्राप्त होता है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करना होता है। इस ज्ञान के क्रियात्मक उपयोग वा आचरण को ही सामाजिक नियमों का पालन कहा जाता है। ऐसा करने से मनुष्य की सामाजिक उन्नति होती है।

स्वाध्याय के महत्व व लाभ का उदाहरण देना हो तो हम आर्यसमाज के एक सदस्य के रूप में दे सकते हैं। एक व्यक्ति आर्यसमाज जाता है। वहां वह सन्ध्या एवं अग्निहोत्र यज्ञ करता है। भजन सुनता, सामूहिक प्रार्थना सुनता व करता है तथा विद्वानों के प्रवचनों को सुनकर उन पर चिन्तन व मनन करता है। इसके साथ ही वह वहां से सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों को लेकर उनका अध्ययन करता है। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से उसका अज्ञान दूर हो जाता है। उसके बाद वह उपनिषद, दर्शन, वेद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों सहित आर्य विद्वानों के विविध विषयों के ग्रन्थों का अध्ययन करता है। ऐसा करने से उसकी अविद्या दूर हो जाती है। वह ऐसा करके एक अच्छा वक्ता व लेखक भी बन सकता है। यज्ञों व संस्कारों को कराने वाला पुरोहित भी बन जाता है। वर्तमान में वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत आदि सभी ग्रन्थ हिन्दी में अनुदित व टीकाओं सहित मिलते हैं। अतः हिन्दी भाषी लोगों को शास्त्र ज्ञान प्राप्त करने में सबसे अधिक सुविधा है। ऋषि दयानन्द ने ही शास्त्रीय ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद व भाष्य करने की परम्परा को जन्म दिया है। स्वाध्याय कर मनुष्य धर्म, अर्थ व काम आदि साधनों से मोक्ष की प्राप्ति की पात्रता को प्राप्त कर उसके निकट पहुंच सकता है। यही जीवन का लक्ष्य भी है जिसे मनुष्य मुख्यतः स्वाध्याय से प्राप्त कर सकता है। जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में भी स्वाध्याय से लाभ होता है। अतः हमें स्वाध्याय करने में कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिये। ऋषि दयानन्द ने बताया है कि ज्ञान की प्राप्ति होने पर मनुष्य को असीम सुख की प्राप्ति होती है। ज्ञान से प्राप्त सुख की तुलना हम अन्य साधनों से प्राप्त सुखों से नहीं कर सकते। हम जो स्वादिष्ट पदार्थों का भोग करते हैं, उससे रोग का भय होता है। अनुचित कार्यों से धन कमायेंगे तो सरकारी दण्ड का भय होता है। सच्चाई से भी धन कमाते हैं तो चोरों का भय होता है परन्तु ज्ञान कितना भी अर्जित कर लें, उसे हमने कोई छीन नहीं सकता। ज्ञान को तो शिष्य बन कर ही प्राप्त किया जा सकता है जिससे गुरु व शिष्य दोनों का कल्याण होता है। अतः स्वाध्याय के द्वारा ज्ञान प्राप्ति का प्रयास सभी स्त्री व पुरुषों को करना चाहिये। इससे स्वाध्याय करने वालों का सर्वविध कल्याण होना सम्भव है।

—वैदिक साधन आश्रम तपोवन का पांच दिवसीय शरदुत्सव सोल्लास सम्पन्न—

'हमने वेदज्ञान की उपेक्षा की तथा उसका आचरण नहीं किया : आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ'

—मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून का पांच दिवसीय शरदुत्सव रविवार 20—10—2019 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा अमृतसर से पधारे वैदिक विद्वान एवं विश्व प्रसिद्ध गीतकार पं. सत्यपाल पथिक जी थे। यज्ञ में मन्त्रोचार गुरुकुल—पौंधा— देहरादून के दो ब्रह्मचारियों ने किया। वेदोपदेश के लिये आगरा के वैदिक विद्वान पंडित उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर आर्य भजनोपदेशक श्री रुहेलसिंह आर्य एवं श्री उम्मेद सिंह विशारद तथा श्री आजाद सिंह लहरी ने भी भजनों के द्वारा अपनी सेवायें ऋषिभक्तों को दीं। रविवार दिनांक 20—10—2019 को यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। यज्ञ चार वृहद यज्ञ कुण्डों में किया गया। मुख्य यजशाला में आश्रम के अध्यक्ष श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री सहित अनेक लोग यजमान के आसन पर विराजमान हुए। अनेक यजमान सपत्नीक भी थे। वैदिक मर्यादा व नियम है कि पति—पत्नी सहित परिवार के सभी सदस्यों को मिलकर यज्ञ करना चाहिये। अन्तर्राष्ट्रीय कवि डा0 सारस्वत मोहन मनीषी जी भी अपने चार सहयोगी आर्य कवियों श्री धर्मेश अविचल, बहिन सुधा शुद्धि, श्री सत्येन्द्र सत्यार्थी तथा बागी चाचा के साथ दिल्ली से पधार कर यज्ञ में उपस्थित हुए एवं सबने यज्ञ में आहुतियां दीं। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद भजनोपदेशक श्री रुहेल सिंह आर्य का एक भजन तथा श्री उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का यज्ञ विषयक व्याख्यान हुआ। इस अवसर पर सभी विद्वानों का शाल, स्मृति—चिन्ह, ओ३म् पट्टे सहित दक्षिणा देकर सम्मान किया गया। यज्ञ के बाद का कार्यक्रम आश्रम के भव्य एवं विशाल सभागार में हुआ।

सभागार में कार्यक्रम का आरम्भ श्री रुहेल सिंह आर्य के भजनों से हुआ। उनके द्वारा प्रस्तुत पहले भजन की एक पंक्ति थी 'माता को जो वचन दिया जान के साथ निभाया, जलियावाला बाग का बदला लेकर के दिखलाया।' श्री आर्य ने कहा कि देश को आजादी चरखा चलाने से नहीं अपितु क्रान्तिकारियों के खून से मिली है। श्री रुहेल सिंह आर्य ने एक अन्य भजन भी सुनाया जिसके बोल थे 'नौजवानों हो खड़े जाति को जगाने के लिये, नाम वेदों का जनाने व बचाने के लिये।' इसके बाद श्री उम्मेद सिंह विशारद जी ने भी एक भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे 'मतकर तू अभिमान रे बन्दे मत कर तू अभिमान।' द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल की आचार्या और उनकी शिष्यायें भी उत्सव में पधारी थीं। इन कन्याओं के दो भजन हुए। प्रथम भजन के बोल थे 'तेरा जन्म सफल हो जाये बन्दे मन में ओ३म् बसा ले।' दूसरे भजन के बोल थे 'आंखे मूंद के जोड़ के हाथ प्रभु जी तेरी शरण हम आये, दाता जी तेरी शरण में हम आये। मेरी विनती सुनो जी मेरे नाथ प्रभु जी तेरी शरण में आये।' इन भजनों के बाद आर्य विद्वान पंडित उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा कि वेद

ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है। उन्होंने श्रोताओं को कहा कि आपने वेद खरीदें नहीं होंगे? उन्होंने पूछा कि क्या आपने वेद खरीदने का कभी विचार किया है? यदि आप नहीं खरीदेंगे तो आपके परिवार के सदस्य और सन्ततियां धर्म का ज्ञान कहां से प्राप्त करेंगी? उन्होंने सभी श्रोताओं को कहा कि यदि वह वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं, जो कि वस्तुतः है, तो आप वेदों का सैट खरीदकर उसे अपने घर में प्रतिष्ठित कर लें। आप वेदों को पढ़े और उस ज्ञान को अपने कर्मों में परिवर्तित करें। आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। उन्होंने पूछा कि क्या आप दैनिक यज्ञ करते हैं? यदि नहीं करते हैं तो यज्ञ करना आरम्भ कर दीजिये। यज्ञ करने से आपको लाभ मिलेगा। केवल वेदोपदेश सुनने से लाभ नहीं होता अपितु पढ़े व सुने हुए ज्ञान के अनुरूप कर्म करने से लाभ होता है। आचार्य जी ने गधे का उदाहरण दिया और कहा कि गधे के ऊपर यदि चन्दन की लकड़ी, सोना व धन सम्पदा रखी हो तो उसे उसका बोध नहीं होता और उसे उसका कोई लाभ भी नहीं होता। आचार्य जी ने कहा कि गधे जैसी ही स्थिति हमारी है। आचार्य जी ने सभी श्रोताओं को वेद खरीदने और उसे अपने गृह में स्थापित करने के लिये प्रतिज्ञा करने को कहा। आप यह भी प्रतिज्ञा करें कि आप प्रतिदिन यज्ञ करेंगे और न्यूनतम 16 आहुतियां यज्ञाग्नि में दिया करेंगे।

आचार्य जी ने प्रश्न किया कि हिन्दू समाज के पतन का कारण क्या है? उन्होंने कहा कि हमने वेद ज्ञान के अध्ययन की उपेक्षा की और उसका आचरण नहीं किया। आचार्य जी ने कहा कि अंग्रेजों ने दो शताब्दियों के लगभग देश पर राज किया। वह अपने ज्ञान को कर्म में परिवर्तित करते थे। वह सात समुद्र पार से आकर हमें गुलाम बना गये और हम पर राज कर चले गये। आचार्य जी ने कहा कि हमारे बन्धु बीड़ी, सिगरेट, अंडे, मांस आदि का सेवन करते हैं। यह सभी पदार्थ हानिकारक हैं और हमारे मन एवं शरीर को दूषित करते हैं। इनसे अनेक प्रकार के रोग होते हैं। इनके सेवन व ऐसे ही कारणों से हमारा पतन हुआ था और हम मुसलमानों और अंग्रेजों के गुलाम बने थे।

आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि वेद मनुर्भव का सन्देश देता है। वेद कहता है कि तू मनुष्य है, मनुष्य बन। हिन्दू, सिख, ईसाई या मुसलमान बनने की शिक्षा वेद में नहीं है। हमें ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैन या सिख नहीं बनना है। हममे मनुष्यता होगी तभी हम मनुष्य बन सकते हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर हमें सत्य का ज्ञान कराये और हम सत्य का आचरण करें। आचार्य जी ने कहा कि हम आचमन करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें यश प्रदान करे। उन्होंने कहा कि हमें मनुष्य जीवन केवल रोटी खाने, बच्चे पैदा करने और मरने के लिये नहीं मिला है। हमें यह मानव जीवन परमात्मा ने शुभ काम के द्वारा यश अर्जित करने के लिये दिया है। आचार्य जी ने आचमन के मन्त्र में आये ''श्री'' शब्द का भी उल्लेख किया और कहा कि धर्म पूर्वक अर्जित धन को श्री कहते हैं। मनुष्य के मानवीय गुण भी श्री कहलाते हैं। वैदिक विद्वान आचार्य श्री कुलश्रेष्ठ ने कहा कि हम पशुओं से डरते नहीं हैं। हमें उन पर विश्वास होता है कि वह हम पर आक्रमण नहीं करेंगे। इसके विपरीत रात के अन्धेरे में मनुष्य–मनुष्य को देख कर डरता है। यह समाज की दुर्दशा की अवस्था है। आदमी आदमी से भयभीत है। इंसानियत समाप्त हो रही है। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर हमें मानवीय गुणों से ओतप्रोत करे।

आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि भारत विश्व गुरु तभी बनेगा जब देश में ज्ञानियों की संख्या अधिक होगी। धार्मिक मनुष्य ही ज्ञानी

होता है। आचार्य जी ने कहा कि आजकल के धार्मिक गुरुओं से भारत विश्व गुरु नहीं बन सकता। यह धार्मिक विद्वान व आचार्य सच्चे ज्ञानी नहीं है। आचार्य जी ने केरल के धार्मिक मन्दिरों में दासी प्रथा का उल्लेख किया। उन्होंने इस प्रथा की निस्सारता बताई और धर्मगुरुओं के ज्ञान को समाज के लिये अहितकर एवं अव्यवहारिक बताया। आचार्य जी ने कहा कि केरल के मन्दिरों में दासी प्रथा का व्यवहार होता है। वहां छोटी आयु की कन्याओं का पत्थर की मूर्ति के साथ विवाह कराते हैं। उन कन्याओं को उस मठ मन्दिर के आचार्यो व पुजारियों को भेंट कर देते हैं जहां वह नारकीय जीवन व्यतीत करती हैं। उनके माता–पिता को यह झूठ प्रचारित किया गया है कि ऐसा करके उन्हें सुख मिलेगा और उनकी मुक्ति हो जायेगी। आचार्य जी ने वहां के मठाधीशों व धर्मगुरुओं द्वारा इस प्रथा को बन्द न कराने व इस अन्याय के प्रति मूक दर्शक बने रहने की आलोचना की। उन्होंने इस अनुचित प्रथा को शीघ्र समाप्त करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमारे धर्मगुरुओं का इस प्रथा पर मौन और इस अन्याय का विरोध न करना उनका असत्य व अनुचित प्रथा को बढ़ावा दे रहा है। कन्याओं का पत्थर की मूर्तियों के साथ विवाह करवाना, उन्हें दासी बनाना और उनके जीवन को नरक में ढालना इन धर्मगुरुओं को ज्ञानी व समाज का हितैषी सिद्ध नहीं करता। इन कन्याओं की उम्र बढ़ने के साथ और नई कन्याओं के इस मिथ्या प्रपंच में फंसते जाने से इन कन्याओं को कुछ समय बात वहां से निकाल दिया जाता है जिन्हें कुछ दलाल, मुसलमान व ईसाई ले जाते हैं। इनमें से कुछ बहिन–बेटियां वैश्यायें बन जाती हैं। आचार्य जी ने इस पर गहरा दुःख जताया।

वेदों एवं शास्त्रों के विद्वान आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि वैदिक धर्म पर आधारित राजनीति करने पर ही देश विश्व गुरु बन सकता है। उन्होंने कहा कि हमारे न्यायाधीशों को भी धार्मिक होना चाहिये। आचार्य जी ने समलैंगिक विवाह और लिव–इन–रिलेशन पर भी प्रश्न उठाये और कहा कि यह वेदविरुद्ध एवं सृष्टि के नियमों के विपरीत है। आचार्य जी ने कहा कि राजनीति में धर्म नहीं होगा तो समाज व्यवस्थित नहीं हो सकता। देश के सभी राजकीय अधिकारियों को धर्म का ज्ञान होना चाहिये और वह सत्य धर्म का पालन करने वाले होने चाहियें। आचार्य जी ने अन्धविश्वासों के उदाहरण भी दिये। उन्होंने कहा कि सभी मत–मतान्तरों तथा सामाजिक संस्थाओं में अज्ञान भरा पड़ा हुआ है। ऐसी स्थिति में भारत विश्व गुरु कैसे बन सकता है?

आचार्य जी ने गंगा की आरती की चर्चा की। उन्होंने कहा कि गंगा पानी की एक नदी है। इसकी मूर्ति नहीं बन सकती। किसी बात को तर्क से सिद्ध किए बिना मनुष्य सत्य को प्राप्त नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि हिन्दू कौम ऐसी है कि कहीं कोई तमाशा खड़ा कर दो, यह वहीं पैसा चढ़ाने लगती है। मत– मतान्तरों के लोग वेदों की सत्य व हितकारी बातें मानने को तैयार नहीं है। उन्होंने कहा कि मनुष्य जानता है कि मूर्ति में कोई शक्ति नहीं होती। इसी कारण से मन्दिरों में ताला लगाया जाता है और वहां चौकीदार बैठाये जाते हैं। आचार्य जी ने जम्मू एवं कश्मीर केन्द्र शासित राज्य में सन् 1990 से आतंकवाद में वृद्धि का भी उल्लेख किया। इस आतंकवाद ने हमारे चालीस हजार भाई बहिनों व बच्चों की हत्या की है। कश्मीर घाटी हिन्दुओं से खाली हो चुकी है जहां कभी शत–प्रतिशत हिन्दू व आर्य होते थे। हमारे ब्राह्मण व पण्डित भाई अपने प्राणों व इज्जत की रक्षा के लिये कश्मीर

छोड़ कर भाग आये हैं। वहां हमारे मन्दिरों को तोड़ा गया है। उन्होंने पूछा कि यदि वैष्णोदेवी में शक्ति होती तो क्या यह सब कुछ होता? देवी में कोई शक्ति नहीं है। हम अपनी सेना के कारण सुरक्षित है। आचार्य जी ने लोगों को आर्यसमाज के सत्संग में परिवार सहित जाने की सलाह दी। उन्होंने वेद पढ़ने का भी आग्रह किया। यज्ञ करने और गुरुकुलों में बच्चों को पढ़ाने का भी आपने आह्वान किया। उन्होंने कहा कि राजनीति में धर्म का प्रवेश होने पर पाखण्डों एवं अधर्म के सभी काम बन्द हो जायेंगे। ऐसी स्थिति होने पर ही देश आगे बढ़ेगा। उन्होंने तपोवन आश्रम के अधिकारियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद किया। आचार्य जी ने ज्ञान को कर्म में बदलने का भी सन्देश दिया। उन्होंने कहा कि इसे अपनाये बिना हम सुरक्षित नहीं हो सकते।

द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की आचार्या डा0 अन्नपूर्णा जी ने कहा कि परमात्मा के द्वारा बनाई गई सभी प्राणी योनियों में मनुष्य योनि श्रेष्ठ है। जो मनन करके कार्यों को करता है उसी को मनुष्य कहते हैं। मनुष्य का जन्म मिलना दुर्लभ है। वेदों का ज्ञान भी मनुष्यों के लिये ही है। धर्म की बात भी मनुष्यों के लिये ही की जाती है। मनुष्य विवेक ज्ञान प्राप्त कर सकता है। भारत विश्व–गुरु धर्म को धारण करके ही बन सकता है। आचार्या जी ने धर्म के दस लक्षणों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि धर्म का सबसे बड़ा प्रमाण वेद है। मनुष्य के अन्दर मनुष्यता ही धर्म है। सम्प्रदाय को दूर करना आवश्यक है। धर्म सबका और सबके लिये एक है। सदाचार सबके लिये धर्म है। मत, पन्थ व सम्प्रदायों को धर्म नहीं कह सकते। हमें संसार से जाना है। हमारा धन हमारे साथ नहीं जायेगा। वह यहीं रह जायेगा। उन्होंने कहा कि जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसी की रक्षा करता है।

आचार्या अन्नपूर्णा जी ने कहा कि पाप का फल दुःख देता है और पुण्य कर्मों का फल सुख देता है। जो दुष्टों को रुलाता है उसका नाम रूद्र है। सुख का मूल धर्म है। अधर्म पर चलने से दुःख मिलेगा। जहां धर्म होता है वहीं व उसी को विजय मिलती है। राजा व राज्याधिकारियों को धार्मिक होना चाहिये। धर्मविहीन राजनीति नहीं होनी चाहिये। धन को धर्मपूर्वक कमाना चाहिये। उन्होंने कहा कि कमाये धन का व्यय परोपकार के कामों में करना चाहिये। हमारे प्राचीन राजा धर्म पर चले थे। धर्म पर चलने के कारण ही यह राजा महान बने थे। इन्हीं से देश महान बना था। आचार्या जी ने अपने वक्तव्य को विराम देते हुए कहा कि हम धर्म को समझें व इसको धारण करें। धर्म को सुनकर, पढ़कर, आत्म–चिन्तन तथा विवेचन कर धारण करना चाहिये। मनुष्य को दूसरों के प्रति वही व्यवहार करना चाहिये जो वह दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं। इसी के साथ विदुषी वक्ता ने अपनी वाणी को विराम दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। भण्डारी जी ने सत्यार्थप्रकाश की चर्चा की और कहा कि वेदों के अनुकूल वर्णव्यवस्था ज्ञान से युक्त है। समाज को शिक्षक, सैनिक और वाणिज्य के कार्य करने वालों की आवश्यकता होती है। इन्हीं को वर्ण के नाम से पुकारा जाता है। वेद प्रत्येक व्यक्ति को बराबर मानता है। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द जी का वेद प्रचार आन्दोलन एक क्रान्तिकारी आन्दोलन था। भण्डारी जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द का वेद प्रचार आन्दोलन, वेदेतर मतों की समीक्षा तथा सत्यार्थप्रकाश में वैदिक मान्यताओं का प्रकाश हमारे लिये अतीव महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने पुत्र व पुत्री के मध्य अतार्किक अन्तर को दूर

करने का प्रयत्न किया। भण्डारी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम धार्मिक व सामाजिक सुधारों की ओर ध्यान दिलाया था और इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने असत्य व अज्ञान पर आधारित अन्धविश्वासों व परम्पराओं का खण्डन और सत्य वैदिक मान्यताओं का मण्डन किया। हमारा कर्तव्य है कि हम आर्यसमाज को मजबूत करें।

कार्यक्रम में विश्व प्रसिद्ध गीतकार एवं भजनोपदेशक पं0 सत्यपाल पथिक जी का भजन हुआ। उनके भजन की पंक्तियां थी 'इन्हीं पागल दिमागों ने भरे अमृत के लच्छे, हमें पागल ही रहने दो कि हम पागल ही अच्छे हैं। मैं पागल हूं मैं पागल हूं दीवाना हूं मदमस्त मदमस्त दीवाना हूं। जो शमा जलाई ऋषिवर ने उस शमा का मैं परवाना हूं।।' कार्यक्रम की समाप्ति से पूर्व स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उत्तरकाशी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वेदों से मनुष्य के अभ्युदय तथा मुक्ति की प्राप्ति का ज्ञान होता है। वेदों में प्रार्थना है कि हमारे देश में सभी व अधिकांश लोग वेदों के विद्वान हों। क्षत्रिय बलवान एवं भयमुक्त होने चाहियें। ऐसा होने पर ही देश की उन्नति होगी। स्वामी जी ने कहा वेद धन कमाने तथा उसका दान करने की प्रेरणा करता है। स्वामी जी ने प्रेरणा करते हुए कहा कि हमें ज्ञानार्जन कर ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य के गुणों को धारण करना चाहिये। सभी नागरिकों को वेदों की शिक्षा दी जानी चाहिये। समाज में किसी से किसी प्रकार का अनुचित भेदभाव नहीं होना चाहिये।

आश्रम के उत्सव में पांचों दिन प्रातः 5.00 बजे से 6.00 बजे तक योग साधना का अभ्यास कराया व सिखाया गया। प्रातः 6.30 बजे से 8.30 बजे तक सन्ध्या एवं यज्ञ होता था जिसके अनन्तर एक भजन एवं यज्ञोपदेश होता था। अपरान्ह व सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक यज्ञ एवं सन्ध्या की जाती थी। यह आयोजन आश्रम की भव्य, विशाल एवं नूतन यज्ञशाला में होता था। दिन के 10.00 से 12.30 बजे तथा रात्रि 8.00 से 10.00 बजे तक आश्रम के सभागार में भजन, प्रवचन व सम्मेलनों आदि का कार्यक्रम होता था। इस अवसर पर सभागार में एक राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, महिला सम्मेलन, तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाई स्कूल के वार्षिकोत्सव सहित आश्रम की 3.00 किमी. दूर पहाड़ियो पर वनों से आच्छादित स्थान पर स्थित तपोभूमि में यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन भी हुआ। कवि सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय कवि ऋषिभक्त डा. सारस्वत मोहन मनीषी जी के नेतृत्व में संचालित हुआ। उनके साथ दिल्ली व पटना के कुल पांच कवि पधारे थे। यह कवि सम्मेलन आश्रम के इतिहास में अपूर्व था। इनके द्वारा प्रस्तुत कवितायें ऋषि दयानन्द, वेद, आर्यसमाज, देशभक्ति की भावनाओं को समर्पित थी। समापन दिवस पर आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने आश्रम की ओर से सभी सहयोगियों एवं कर्मचारियों का धन्यवाद किया। उन्होंने अनेक सूचनाये भी दी। इसी के साथ वैदिक साधन आश्रम तपोवन का पांच दिवसीय शरदुत्सव सम्पन्न हुआ। अन्त में शान्ति पाठ भी किया गया। इसके बाद सभी अतिथियों वा श्रोताओं ने ऋषि लंगर प्राप्त किया। बाहर से आये हुए ऋषिभक्त अतिथि अपने–अपने गृहस्थानों को लौटने लगे। हमें भी पांच दिनों तक आश्रम के उत्सव में भाग लेने का अवसर मिला। इस उत्सव में हमने सभी विद्वानों को सुना और उसे लगभग 13 लेखों के माध्यम से अपने फेसबुक तथा व्हटशप मित्रों से साझा किया और इमेल से पत्र–पत्रिकाओं आदि को प्रेषित किया। ईश्वर ने हमें यह कार्य करने की शक्ति दी, इसके लिए हम उसका कोटिशः धन्यवाद करते हैं।

सीता जी को राम की अँगूठी देना

—ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी

सीता को यद्यपि हनुमान के विषय में राम के दूत होने का अब सन्देह नहीं रहा था, तथापि इस विश्वास को दृढ़ करने के लिये हनुमान जी ने राम की अंगूठी सीता को अर्पण कर दी, जिसे पाकर सीता को इतना आनन्द हुआ जैसे कि उन्हें राम ही मिल गये हों। उस समय सीता का मुख इतना कान्तियुक्त प्रतीत होता था मानो चन्द्रमा ग्रहण से मुक्त हुआ है। अंगूठी पाकर प्रसन्न हुई सीता ने हनुमान की प्रशंसा करते हुए कहा—

विक्रान्तस्त्वं समर्थस्त्वं प्राज्ञस्त्वं वानरोत्तम।
येनेदं राक्षसपदं त्वयैकेन प्रधर्षितम्। सु० ।।३६।।७
शतयोजन विस्तीर्णः सागरो मकरालयः।
विक्रमश्लाघनीयेन क्रमता गोश्पदीकृतः ।।३६।।८
न हि त्वां प्राकृतं मन्ये वानरं वानरर्षभ।
यस्य ते नास्ति संत्रासो रावण दपि संभ्रमः ।।३६।।६
अर्हसे च कपिश्रेष्ठ! मया समभिभाषितुम्।
यद्यसि प्रेषितस्तेन रामेण विदितात्मना।।३६।।१०
प्रेषयिश्यति दुर्धर्षो रामो नह्यपरीक्षितम्।
पराक्रममविज्ञश्य मत्सकाशं विशेषतः।।३६।।११

हनुमान्! तुम बड़े शूरवीर, सतर्थवान् और बुद्धिमान् हो, जो तुमने अकेले ने ही इस राक्षसों के स्थान को तिरस्कृत कर दिया है। धन्य है तुम्हारे पुरुषार्थ को, जिसने बड़े—बड़े भयंकर जल—जन्तुओं से युक्त समुद्र को तुच्छ जानकर पार कर लिया। इसलिये मैं तुम्हें साधारण वानर नहीं समझती। निश्चय ही तुमको रावण से भय व त्रास नहीं है। अतः हे वानर श्रेष्ठ! तुम मुझसे वार्तालाप आदि करने के योग्य हो, क्योंकि आत्म—वेत्ता राम ने तुमको भेजा है। राम अपरीक्षित पुरुष और विशेष कर पराक्रम्—हीन पुरुष मेरे पास कभी नहीं भेज सकते।

रामचरित मानस में श्री तुलसीदास जी ने बहुत ही संक्षेप में, इसे इस प्रकार कहा है—

कपि के वचन सप्रेम सुनि उपजा मन विश्वास।
जाना मन क्रम वचन यह कृपासिंधु कर दास।।
हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी।
सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी।।

इसके बाद महातेजस्वी पवनकुमार हनुमान् ने सीता जी को भगवान् श्रीराम की दी हुई अंगूठी दी, जिसे लेकर वे इतनी प्रसन्न हुई, मानो स्वयं भगवान राम ही मिल गये हों।

उस समय हनुमान् जी से कहती हैं—

बूढ़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुं जल जाना।
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी।।
कोमल चित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई।।
सहज बानि सेवक सुखदायक। कबहुँक सुरति करत रघुनायक।।
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता।।
वचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हों निपट बिसारी।।

यों सीता को विरह—व्याकुल देखकर हनुमान् कहते हैं—

मतु कुसल प्रभु अनुज समेता। तब दुख दुखी सुकृपा निकेता।।
जनि जननी मानहु जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेमु राग कें दूना।।
रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर।।

इसके बाद बड़ी बुद्धिमानी के साथ श्रीराम के प्रेम और विरह—व्याकुलता की बात श्री हनुमान् जी ने माता सीता को सुनायी। अन्त में कहा कि श्री रामचन्द्रजी ने कहा है—

तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा।।
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं।।

इस प्रकार श्रीराम का प्रेमपूर्वक सन्देश सुनकर सीता प्रेम में मग्न हो गयीं, उन्हें अपने

शरीर का भी भान नहीं रहा। तब हनुमान् जी फिर कहते हैं–

उर आनहु रघुपति, प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु कदराई।।
निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु।।

अध्यात्म रामायण में लिखा है कि बातों ही बातों में सीता जी ने जब यह पूछा कि वानर–सेना के सहित श्रीराम इस बड़े भारी समुद्र को पार कर यहां कैसे आ सकेंगे? तब–

हनुमानाह मे स्कन्धावारुह्य पुरुषर्शभौ।
आयास्यतः ससैन्यश्च सुग्रीवा वानरेश्वरः।।
विहायसा क्षणेनैव तीर्त्वा वाररिधिमाततम्।।
सु० २।४६–४७

हनुमान ने कहा– वे दोनों नरश्रेष्ठ मेरे कन्धों पर चढ़कर आ जायेंगे और समस्त सेना के सहित वानरराज सुग्रीव भी आकाश मार्ग से क्षणमात्र में ही इस महासमुद्र से पार होकर आ जायेंगे।

हनुमान के आशा भरे शब्दों को सुनकर सीता में इस प्रकार जीवन व आनन्द आ गया जैसे कुछ–कुछ उभरी हुई खेती में वर्षा होने से आ जाता है। इसी आनन्द में सीता ने अपना सन्देश हनुमान् को बड़े नम्र शब्दों में पुनः स्मरण कराया और चलते हुए हनुमान् का स्तुति युक्त शब्दों से धन्यवाद किया।

वाटिका–विध्वंस

सीता से विदा होते हुए हनुमान् ने उचित समझा कि वीरों को शत्रुदल में से चुपचाप जाना शोभा नहीं देता, अतः कुछ परिचय देना चाहिये। इस विचार से उन्होंने रावण की अति प्रिय अशोक–वाटिका को बिगाड़ना आरम्भ कर दिया, जिसे देखकर राक्षिसियों ने पहले तो सीता से पूछा कि यह कौन है, यहाँ कैसे आया है, और तेरे साथ क्या बातचीत करता था? उत्तर में सीता ने कुछ न बताया वरन् यह कह दिया कि मैं तो राक्षसों की माया को नहीं जानती। सांप के पांव को साँप ही जान सकता है।

रावण का कोप और हनुमान का साहस

तब राक्षसियों ने रावण को हनुमान् द्वारा अशोक–वाटिका के विध्वंस की सूचना दी। वाटिका का विध्वंस सुनकर क्रोध से लाल–लाल नेत्र करके रावण ने बड़े–बड़े वीर योद्धाओं को हनुमान् को पकड़ने के लिये आज्ञा दी। आज्ञा पाते ही राक्षस शस्त्र–अस्त्रों से सज्जित होकर हनुमान् के पास जाकर उनको धमकाने लगे।

राक्षसों के इस व्यवहार को देखकर तेजस्वी हनुमान् वीरता के शब्दों को उच्चार कर अतिबली राम, महाबली लक्ष्मण तथा राममित्र महाराज सुग्रीव की जय ऐसा कहने लगे–

जयत्यतिबली रामो लक्ष्मणश्च महाबलः।
राजा जयति सुग्रीवो राघवेणाभिपालितः। ४२।३३
वासेऽहं कोसलेन्द्रस्य रामस्याक्लिष्टकर्मण।
हनुमाछत्रुसैन्यानां निहन्ता मारुतात्मजः।४२।३४
न रावणसहस्त्रं मे युद्धे प्रतिबलं भवेत्।
शिलाभिश्च प्रहस्तः पादपैश्च सहस्त्रशः।४२।३५
अर्दयित्वा पुरीं लंकामभिबाद्य च मैथिलीम्।
समृद्धार्थो गमिश्यामि मिशताँ सर्वरक्षसाम्। ४२।३३

राम, लक्ष्मण तथा सुग्रीव की लंका में जय हो! इन शब्दों को सुनकर और क्रोधित हुए राक्षसों ने जब इनका नाम–धाम पूछा तो हनुमान् ने कहा कि–

''मैं उच्च कर्मा कौशलेन्द्र(राम) का दास व शत्रु सेना का हन्ता पवन पुत्र हनुमान् हूँ। सहस्त्रों रावण भी शस्त्र–अस्त्रों से सज्जित होकर युद्ध में मुझे नहीं जीत सकते। लंकापुरी को तहस–नहस कर माता सीता को प्रणाम करके अब सब राक्षसों के देखते–देखते अपनी कार्य–सिद्धि करके मैं जाऊँगा।''

यह सुनकर रावण की आज्ञा से अनेकों राक्षसों ने हनुमान् को अपशब्द कहे, जिनका योग्य उत्तर हनुमान् ने उसी समय दे दिया। तब फिर राक्षस हनुमान् की वीर कथा के सुनाने के लिये रावण के पास गये और विशेष उपाय से हनुमान् के पकड़ने का प्रबन्ध करने लगे।

हनुमान से राक्षसों का युद्ध

अब राक्षसों को अपने बल का परिचय देने के लिए हनुमान् ने वीरकृत्य आरम्भ कर दिये, जिसे सुनकर रावण की आज्ञा से युद्ध में दुर्जय महाबली जम्बुमाली नाम का राक्षस धनुष धारण कर स्वर युक्त रथ में हनुमान को पकड़ने की इच्छा से आया।

हनुमान् ने भी उसे देखकर वीरता का शब्द किया और झट युद्ध आरम्भ हो गया। महाबली हनुमान ने उसके सारे शस्त्र–अस्त्रों को छिन्न–भिन्न कर एक प्रहार से ही उसे ऐसा मारा कि वह तत्क्षण गिर पड़ा और मर गया। जम्बुमाली के वध को सुनकर रावण बड़ा क्रुद्ध हुआ तथा उसने अपने मन्त्री के वीर और अस्त्र विद्या में निपुण अनेक पुत्र युद्ध में भेजे। थोड़ी देर तक उन्होंने वाणों की ऐसी बौछार की जैसे कि वर्षा काल के मेघ वृष्टि करते हैं। परन्तु ज्योंही हनुमान ने उनके प्रहारों से अपने आपको बचाकर उन पर प्रहार करने आरम्भ किये, वे झट पृथ्वी पर गिरने लगे। यहाँ तक कि दिन अस्त होने से पूर्व ही वे सब प्राण त्याग गये।

मंत्री पुत्रों का वध सुनकर रावण को बड़ी चिन्ता हुई, अतः उसने बड़े–बड़े विद्वान् व युद्ध विद्या–विशारदों की सभा बुलवाई तथा उसमें सबके सामने विरूपाक्ष, युपाक्ष, दुर्धर्ष, प्रघस तथा भासकर्ण आदि सेना नायकों को सम्बोधन कर कहा–

वीरो! जाओ उस कपि को बाँधो, जिसने इतने उग्र कर्म किये हैं। परन्तु इसमें नीति शास्त्र से देशकाल का विचार कर लेना योग्य है, क्योंकि मैं इसे साधारण वानर नहीं मानता। इसे साधारण समझ मेरा मन निश्चिन्त नहीं होता। मैंने कई बार वानर जाति के बड़े–बड़े बलधारी पुरुष देखे हैं, अर्थात् बाली, सुग्रीव, महाबली जाम्बवान्, सेनापति नील और अन्यास द्विविच(दो वेदों के जानने वाला) आदि देखे परन्तु उनमें कभी इस जैसी न भीम गति, न तेज, न पराक्रम, न बुद्धि, न बल, न उत्साह और न ही रूप लावण्य देखा। इसलिए इसे बड़ी सत्ता वाला तथा महाशक्तिधारी पुरुष समझना चाहिए। अतएव इस के पकड़ने के निमित्त कोई बड़ा यत्न करो।

कामं लोकास्त्रयः सेन्द्राः ससुराऽसुरमानवाः।
भवतामग्रस्तः स्थातुं न पर्याप्ता रणजिरे।। सु० ।४६।१५
तथापिं तु नयज्ञेन जयमाकाङ्क्षता रणे।
आत्मा रक्ष्यः प्रयत्नेन युद्धसिद्धिर्हि चंचलो।। सु० ।४६।१५

यद्यपि सुर, असुर तथा मनुष्य आप लोगों के आगे ठहर नहीं सकते, तो भी जय के अभिलाषी नीतिमान् पुरुष को अपनी रक्षा का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि युद्ध में सिद्धि(जय) चंचल होती है।

स्वामी की आज्ञा पाकर अनेकों योधाओं सहित विरूपाक्ष आदि पाँच सेनानायक हनुमान को पकड़ने के लिए गये और जाते ही हनुमान पर प्रहार करने लग गये। तब महायोधा वीर–नायक वेदवित् हनुमान ने पहले अपनी रक्षा का उपाय किया अर्थात् उनके प्रहारों को

सहा, परन्तु ज्योंहि वे अधिक क्रूरता करने लगे, तब थोड़ी देर में बारी–बारी से इनकी सेना सहित पांचो नायकों को मार दिया और स्वयं इनकी सहायता को आने वाले राक्षसों के साथ युद्ध करने के लिये उद्यत हो गये।

हनुमान ने उन राक्षसों में से किसी को थप्पड़ मारकर गिरा दिया, कितनों को पैरों से कुचल डाला, कइयों का मुक्कों से काम तमाम कर दिया और बहुतों को नखों से फाड़ डाला। कुछ को छाती से रगड़कर उनका कचूमर निकाल दिया तो किन्हीं–किन्हीं को दोनों जाँघों से दबोचकर पीस डाला। कितने ही राक्षस तो उनकी भयानक गर्जना से वहाँ पृथ्वी पर ही गिर गड़े।

हनुमान का पकड़ना

इन पांचों सेनापतियों के मारे जाने पर रावण ने कुमार अक्ष को कुछ योधा देकर भेजा और जब वह भी मारा गया तो बड़ा दुःखी व विस्मित होकर रावण ने इन्द्रजीत्(मेघनाद) को बुला कर आज्ञा दी, कि वीर! तू सब लोगों में अनुपम योधा और भुजबल में प्रसिद्ध है तथा तप और विद्या के प्रभाव से देश–काल को भी जानता है। जा, जाकर हनुमान् को पकड़ ला क्योंकि उसने अनेकों किंकर मार दिये हैं तथा जाम्बुमाली, अमात्यपूत्र, पंचसेनानी और बहुत से दूसरे योधा नाश किये हैं और अब कुमार अक्ष को भी मार डाला है। देख तू यह विचार कभी मत करना, कि जिसने इतने बड़े–बड़े योद्धा मार दिये उस पर मेरा क्या वश चलेगा। क्योंकि उनमें वह बल ना था जो तुझमें है, इसलिए जा, शीघ्र उसे पकड़ कर ले आ।

न खल्वियं मतिश्रेष्ठ! यत्वां सप्रेशपाम्यहम्!
इयंच राजधर्माणां क्षत्रस्य च मतिर्मता।। सु०४८।१३

नानाशास्त्रेशु संग्रामे वंशारद्यमन्दिरम्।
अवश्यमेव बोद्धव्यं काम्यश्च विजयों रणे। सु० ४८।१४

प्रिय पुत्र! इस महा संकट में तुझे भेजने को मेरी इच्छा नहीं थी, पर राजपुत्र! क्या करूं राजधर्म तथा क्षत्रिय–धर्म की नीति ही यह है।

हे शत्रुदल दमन कर्ता! नाना शास्त्रों में निपुणता और जय की उत्कट कामना, यह दो बातें युद्ध में योधाओं को सहायता देती है।

राजा की आज्ञा पाकर रथ में बैठ, शस्त्र–अस्त्रों से युक्त मेघनाद हनुमान् के साथ युद्ध करने गया। कुछ काल तक मेघनाद तथा हनुमान् का बड़ा तुमुल युद्ध हुआ परन्तु जब हनुमान् ने अपना युद्ध–कौशल तेजी से दिखाना प्रारम्भ किया तब मेघनाद को निश्चय हो गया कि यह वीर मुझ से मारा नहीं जा सकता। अतः हो सके तो इसे बाँध लेना चाहिए।

अवध्योऽयमिति ज्ञात्वा तमस्त्रेणास्त्रतत्ववित्।
निजग्राह महाबाहुं मारुतात्मजमिन्द्रजित् ।४८।३७।
तेनबद्धस्ततोऽस्त्रेण राक्षसेन स वानरः।
अभवन्निर्विचेष्टश्च पवात च महीतले। ४८।३८।
ग्रहणे चापि रक्षोभिर्महन्मे गुणदर्शनम्।
राक्षसेन्द्रेण सम्वादस्तस्माद् गृहल्तु मां परे। ४८।३६।

यह निश्चय कर मेघनाद ने दूर से ही एक अस्त्र फेंककर हनुमान् को बांध दिया। बन्धन पड़ते ही हनुमान् एक बार तो निश्चेष्ठ हो कर पृथ्वी पर गिर पड़े पर ज्योंही उनको चेतना हुई और उन्होंने जाना कि राक्षसों ने इसलिये निग्रह अस्त्र डाला है कि वे मुझे पकड़कर राक्षसेन्द्र रावण के पास ले जाए तो उन्होंने विचारा कि इसमें भी मुझे लाभ ही होगा, क्योंकि अब मैं इस बहाने रावण की राजसभा में जाकर रावण से संवाद तो कर सकूँगा जिससे मुझे उसकी रीति–नीति का स्पष्ट पता लग जायेगा।

पायरिया से बचाव

—डा० सरला डंग जी (दन्त चिकित्सक)

सबसे पहले हमें यह जान ले आवश्यक होगा कि पायरिया रोग क्या है? इसके लक्षण क्या है, और यह क्यों होता है, तभी हम इस रोग से बचने के उपाय कर सकते है।

हमारे दांत बड़े ठोस होते है, पर मसूड़े बहुत ही कोमल होते है, मसूडों की खराबी को ही पायरिया रोग कहते हैं, और कई लोग इसे मांस खोरा भी कहते है। इस रोग में मसूड़े फूल जाते है, और उनमें पस भर जाती है, और मसूड़े इतने नाजुक हो जाते है, कि जरा सा धक्का लगने या छू जाने से ही खून निकलने लगता है। प्रातः जब सो कर उठते है, तो मुंह से दुर्गन्ध आती है, मुंह चिपचिपा सा लगता है, थूकने पर, दातून या ब्रश करने से भी मसूड़ों से खून निकलता है। इस रोग में अक्सर पेट भी खराब रहता है। घुटनों, जोड़ों में दर्द और कभी—कभी सिर व आंखों में भी दर्द बना रहता है। जब ऐसे लक्षण प्रतीत हो तो इसे पायरिया रोग समझना चाहिए।

रोग के लक्षण—

रोग के कीटाणु यानी बैक्टीरिया हमेशा मुंह में रहते है, बैक्टीरिया की भी झीनी परत जिसे प्लेक कहते है दांतो से चिपकी रहती है। प्लेक में मौजूद बैक्टीरिया ऐसा पदार्थ पैदा करते है, जिससे मसूड़ों के तन्तुओं में खुजली व जलन पैदा होती है। अगर प्लेक नहीं हटाया गया तो मसूड़ों के पास सख्त सा हो जाता है, तो टार्टर बना देता है। जब टार्टर दातों को सहारा देने वाली हड्डी तक पहुंच जाता है, तो दांत हिलने लगते है। मसूड़े लाल रंग के हो जाते है, जबकि स्वस्थ मसूड़ों का रंग गुलाबी होता है, और अस्वस्थ दांतों पर काली पीली मैल और धारिया होती है। इस रोग के कई कारण होते है—

जैसे—मुंह की सफाई में कमी होना, मुंह में टेड़े—मेड़े दांतो का होना जिनका स्वस्थ दांतो पर दवाब पड़ना, दांतो और मसूड़ो के बीच भोजन के कणों का हर समय भरा रहना, या दांतो में भरी गई चीज मसूडों पर रगड़ खाती हो। कई बार अधिक समय तक बीमार रहने से तेज दवाईयों के प्रयोग से पुराने रोग मधुमेह, टाइफाइड, मलेरिया आदि की औषधियों के विषैले प्रभाव जैसे कि पारा, सिक्का आदि। इसके अतिरिक्त कई प्रकार की गलत आदतों से भी यह रोग होता है। जैसे कि हर समय तम्बाकू चबाते रहना, अधिक सिगरेट—बीड़ी पीना, पेंसिल चबाना, पेपर, नाखून या किसी अन्य वस्तु को दांतो से काटने की आदत या किसी पिन से दांतो को खोदते रहना। हर समय पान खाने का प्रभाव भी मसूड़ो पर बहुत पड़ता है। कत्था और चूने की परत धीरे—धीरे दांतो और मसूड़ो पर जमती रहती है, और धीरे—धीरे सख्त सी परत मसूड़ों पर टार्टर के रूप में ठोस हो जाती है, जिस से मसूड़ो में खून का दौरा कम होकर रूक सा जाता है, मसूड़े फूल जाते हैं, और पस भर जाती है, और खून रिसने लगता है। यह गंदा खून और मवाद भोजन के साथ हमारे शरीर के आंतरिक भागों में विषैला प्रभाव डालते हैं मुंह से दुर्गन्ध के कारण मन शरीर अस्वस्थ बना रहता है।

जब ऐसा आभास होने लगे तो सब से पहले इस रोग के पैदा होने कारणों को दूर करने के उपाय तथा रोग से बचने की कोशिश की जाए। ज्वर बना रहता हो या पेट खराब रहता हो। पेट में गैस बनती हो या जो भी कारण पता चले कम करने की कोशिश की जानी चाहिए।

जितनी भी बार कुछ खाएं मुंह की सफाई करनी चाहिए। दांतो के आस–पास टार्टर जम गया हो तो किसी दंत चिकित्सालय से जाकर साफ करवा लें। मसूड़ों को दिन में 2–3 बार उंगली से 2–4 मिनट मालिस करें। कीटाणुनाशक, पोटैशियम डिटोल, फिटकरी या नमक के पानी से कभी–कभी कुल्ला करते रहे। ऐसी वस्तुओं का भी प्रयोग करें जिस से दांतो व मसूड़ों की कसरत हो। गाजर, मूली, अमरूद, फल आदि खाना, गन्ना चूसना आदि भी जबड़े दांतो तथा मसूड़ों के लिये व्यायाम ही तो है। दातून चबाना भी कसरत है, दांत तो साफ होते ही है, पर दातून चबाने से जो रस निकलता है, वह कीटाणुनाशक भी होता है, और मसूड़ो के लिये गुणकारी भी, पर शहरों में दातून कम मिलता है इसलिये किसी अच्छी टूथपेस्ट के साथ ब्रस का प्रयोग करें। ब्रश को हो सके तो हर महीने बदल देना चाहिए। यदि ब्रश ठीक रहता हो तो नमक के घोल में भिगो कर कुछ समय धूप में रखकर कीटाणु रहित बनाया जा सकता है। दातून या ब्रश करने की विधि भी उचित होनी चाहिए। यानी ब्रश को करते समय ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर की विधि से करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि सफाई उचित ढंग से हो तो रोग होने की संभावना नही रहती है।

मसूड़ो और दांतो के लिये आहार और भोजन कैसा हो? भोजन संतुलित होना चाहिए। दूध, ताजे फल और हरी सब्जियाँ, अधिक प्रयोग करें। गरिष्ठ और तले हुये पदार्थ कम खाएं। पैस्ट्री, अधिक मसालेदार भोजन, चॉकलेट, टॉफी इस प्रकार की चीजें जो दांतों पर चिपकी रहे जहाँ तक हो सके कम से कम प्रयोग में लाए। तम्बाकू और पान का प्रयोग भी धीरे–धीरे कम या बंद करने की कोशिश करें, हर प्रकार से ऐसी कोशिश की जाए कि यह रोग हो ही नही, अगर हो भी जाए तो तुरंत ही इलाज करवाकर अपने आप को स्वस्थ एवं प्रसन्न रखें।

मिरगी की अनुभूत दवाएं

बाबूराम गुप्ता मेडिकल स्टोर, सदर बाजार जलांधर

एक संत ने मुझको यह दवा बतलायी थी। मैंने कई रोगियों पर इसका प्रयोग किया, सभी रोगी अच्छे हो गये। मिरगी का रोग नया या पुराना इससे सबको लाभ होता है।

विधि–कपिला गायका दूध प्रातःकाल बासी–मुख और संध्या को जितना पी सके, 40 दिनों तक पीना चाहिये। दूध ताजा दुआ हुआ हो। उसे न गरम किया जाय और न चीनी डाली जाय। केवल छानकर पी लिया जाए। गायके थन अवश्य काले होने चाहिये। शरीर काला हो या न हो। गाय पहले ब्यानकी न हो, दूसरे या तीसरे की भले ही हो। ईश्वर की कृपा से इस प्रयोग से पूरा आराम होता है।

इसका दूसरा लाभ यह है कि कपिला गाय के कच्चे दूध को एग्जिमा, दाद, खारिश आदि पर खूब मलकर गरम जल से स्नान किया जाए तो 40 दिनों के प्रयोग से रोगी रोगमुक्त हो जाता है।

होम्योपैथिक उपचार

—डॉ० राजेन्द्र सिंह

आजकल की भाग दौड़ भरी जिन्दगी में मनुष्य की जीवन शैली(लाईफ स्टाइल) में खराब खान—पान, बढ़ते प्रदूषण एवं बढ़ते कार्य दवाब के कारण बीमारियों ने पैठ बना ली है। आजकल खाना बनाने में हम अक्सर एल्यूमीनियम के बर्तन का एवं प्लास्टिक के बर्तनों का उपयोग करने लगे है। साग, सब्जियों में प्रयोग होने वाले पैस्टीसाईड्स से उसका कुछ अंश सब्जियों में माध्यम से हमारे शरीर में चला जाता है, जिससे हमारे शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, जिसके कारण हमारे तंत्रिका तंत्र एवं कोशिकाओं पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। एल्यूमीनियम हवा और पानी के साथ मिलकर एल्यूमीनियम ऑक्साइड बनाता है, जो कि हमारे शरीर के लिए जहर है, जिससे कैन्सर होने की सम्भावना बढ़ जाती है। हमारा शरीर लाखों कोशिकाओं से मिलकर बना है, उनका नियंत्रण केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र एवं परिधीय तंत्रिका तंत्र के द्वारा होता है। तम्बाकू एवं किसी भी प्रकार का नशा करने से हमारे शरीर की तंत्रिका तंत्र सुस्त हो जाती है, जिससे सैन्सर फेल्यर हो जाता है, जिस कारण शरीर में जिस आर्गन का सैन्सर फेल्यर हो जाता है, उस पार्ट पर नियंत्रण न होने के कारण कोशिकाऐं अनियंत्रित कार्य करने लगती है, जिससे कोशिकाऐं एबनार्मल एवं अनकन्ट्रोल होने लगती है, चाहे वह ब्रेस्ट में, सर्विक्स में, ओबरी में, गॉल ब्लेडर में, किड़नी में, लीवर में या फेफडों में हो इसी को कैन्सर कहते हैं। एबनार्मल अनकन्ट्रोल होने के कारण उस आर्गन की कार्यप्रणाली डिस्टर्ब हो जाती है और शरीर में हारमोन्स असंतुलित हो जाते है, जिस कारण थाईराइड़ मधुमेय, उच्च रक्तचाप, हृद्य रोग जैसी आदि गम्भीर बीमारियां हो जाती है।

अच्छे स्वास्थ्य एवं फिट रहने के लिए हमें अपनी लाईफ स्टाईल में संतुलन बनाये रखना होगा, जिसके लिए हमें सन्तुलित भोजन, समय पर सोना व उठना, समय पर व्यायाम करना, सैर करना आदि स्वास्थ्य को ठीक करने वाले कार्य करने चाहिए। ऑफिस के कार्य के दवाब को आफिस में ही छोड़कर आना चाहिए अन्यथा अवसाद एवं तनाव के कारण उच्च रक्तचाप व मधुमेह होने की सम्भावना प्रबल हो जाती है। यदि शरीर में शुगर की मात्रा अधिक होगी तो मधुमेय हो जाता है, जिससे किडनी, ब्रेन, हार्ट अटैक की सम्भावना बढ़ जाती है। एकदम गर्मी से उठकर ठण्ड में और ठंड से उठकर गर्मी में नहीं जाना चाहिए, यदि ऐसा किया गया तो सर्दी एवं जुकाम होने की सम्भावना बढ़ जाती है। दूध एवं दही का सेवन करने के बाद खट्टी चीजें नहीं खानी चाहिए। जाडों में बासमती चावल, दही व मट्ठा का

सेवन नहीं करना चाहिए, इसका सेवन करने से जोड़ों में दर्द हो सकता है। गर्मी में दही व मट्ठा शरीर के लिये अमृत का कार्य करती है और हमारे शरीर को ठण्डक पहुंचाती है।

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति द्वारा लक्षणों के आधार पर होम्योपैथिक औषधियां कार्य करती है। होम्योपैथिक चिकित्सक के माध्यम से औषधि लेने से पुराने से पुराने त्वचा रोग, पथरी, लीवर, ब्रोन्काईटिस, मानसिक रोग, जोडों के दर्द, शुगर, आर्थराईटिस आदि गम्भीर बिमारियों से बचाव किया जा सकता है। होम्योपैथिक औषधि बच्चों में बहुत कारगर है।

- डेंगू आदि में यूपेटोरियम 200 बहुत अच्छा कार्य करती है।
- जाड़े के मौसम में एलर्जी होने पर एकोनाइट, हीपर सल्फर एवं जेलसीमियम 30 बहुत कारगर है।
- नाक बंद होने पर नक्स वोमिका एवं लाईकोपोडियम औषधि अच्छा कार्य करती है।
- ज्यादा ठंड लगने पर नक्स वोमिका औषधि दो दिन खाने से आराम मिलता है। यह औषधि पाईल्स के ईलाज में अच्छा कार्य करती है।
- दस्त में पोडोफॉयलम अच्छा कार्य करती है।
- पेट दर्द में कोलोन्थिस औषधि कारगर है।
- बच्चों के पेट एवं सर्दी जुकाम में सिना औषधि अच्छा कार्य करती है।

मिरगी की अनुभूत दवाएं

प्रेमशंकर त्रिवेदी सफीपुर, उन्नाव

निम्नलिखित नुसखे को आयुर्वेद में ''सारस्वत–चूर्ण'' कहा जाता है। यह छात्रों के लिये बुद्धिवर्धक भी है। बालबच, अश्वगन्ध, शतावर, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, गुर्चका सत्त, वेरकी गुठली की मींगी, पेठे का छिलका, सफेद चन्दन का बुरादा और ओदे सलीब–ये दसों चीजें तीन–तीन तोले या सम मात्रा में कम–ज्यादा न लेकर कूटकर कपड़े से छान लें। चूर्ण तैयार हो जाएगा। एक चम्मच चूर्ण एक चम्मच ब्राह्मीघृत के साथ मिलाकर दिन में चार बार सेवन करें। ब्राह्मीघृत आयुर्वेदिक दवा की दुकानों पर मिल जाती है, न मिले तो गाय का घृत लिया जा सकता है। दो–तीन मासतक सेवन करने पर मृगी का रोग पूर्णतया मिट जाता है।

रोगी का पेट साफ रहे, इसलिए 5–6 दिनपर एक बार त्रिफलाचूर्ण देकर रेचन करवा दिया जाए। यह बहुत बारीक परीक्षित औषधि है। यह स्मरणशक्ति बढ़ाने में, अन्य प्रकार के स्नायुरोगों तथा पागलपन मिटाने में भी उपयोगी है।

शील

—महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

''पुत्र! सुन मैं तुझे यह कथा सुनाता हूँ''। धृतराष्ट्र ने दुर्योधन से यह कहा और फिर एक कथा सुनाना आरम्भ किया, जो इस प्रकार है—

युग बीत गये। प्राचीन युग में प्रह्लाद नामक एक राक्षस रहता था, परन्तु शील के कारण उसने इन्द्र के राज्य पर भी हाथ मारा और स्वयं राजा बन गया। इन्द्र दुःखी होकर बृहस्पति के पास गया और उनसे पूछा—''अब मैं क्या करूँ? मेरा कल्याण कैसे हो?'' बृहस्पति ने उससे कहा—''इन्द्र! तू ब्राह्मण का वेश धारण करके प्रह्लाद के पास जा। वह तुझे बताएगा कि तेरे कल्याण का कौन सा मार्ग है।''

इन्द्र ब्राह्मण की वेशभूषा में सुसज्जित होकर प्रह्लाद के पास पहुँचा और कहने लगा—''राजन्! मैं आपके पास इसलिए आया हूँ कि मेरा कल्याण जिस भी उपाय से हो, आप मुझे उसका उपदेश करें।''

प्रह्लाद ने उसे आदर से बिठाया। आवभगत की। जब दोनों निश्चिंत होकर बैठे तब इन्द्र ने अवसर देखकर पुनः प्रश्न किया—

''राजन! आपने इस त्रिलोकी का राज्य कैसे प्राप्त किया।''

प्रह्लाद—हे सम्मान के योग्य ब्राह्मन्! सुनो, मैं कभी धर्म से इधर—उधर नहीं हुआ। कोई राजा धर्म पर स्थित नहीं रह सकता, मैंने सच्चे ब्राह्मणों और सन्यासियों को अपना मार्गदर्शक बनाया। वे मुझे शुद्ध धर्म के मार्ग पर चलाते रहे और उसी कारण यह राज्य मुझे प्राप्त हो गया।

देर तक इस प्रकार बातें होती रहीं। अन्त में प्रह्लाद ने इन्द्र से कहा—हे ब्राह्मण! मैं आपसे बहुत प्रसन्न हूँ। कहिए, मैं आपकी क्या सेवा करूँ।

इन्द्र—राजन्! मैं और कुछ नहीं चाहता। मुझे केवल अपना शील दे दीजिए। प्रह्लाद ने प्रसन्नता से शील दे दिया।

जब इन्द्र शील लेकर चला गया तब प्रह्लाद को चिन्ता सताने लगी। इतने में ही प्रह्लाद के शरीर से एक तेज निकला।

उसे देखकर प्रह्लाद ने पूछा—''तू कौन है?''

उस मुर्तिमान् तेज ने उत्तर दिया—''मैं शील हूँ।''

प्रह्लाद—तू कहाँ जाता है?

तेज—''मैं तेरे ब्राह्मण इन्द्र के पास जाता हूँ, क्योंकि तूने मेरा त्याग कर दिया है।'' यह कहकर वह तेज अदृश्य हो गया।

उस तेज के जाते ही प्रह्लाद के मुखमण्डल पर मृत्यु सी छा गई। कुछ समय और व्यतीत हो गया। एक और तेज प्रह्लाद के शरीर से निकला।

प्रह्लाद ने उससे पूछा—'' हे तेज! तू कौन है और कहाँ जाता है?''

तेज—''हे प्रह्लाद! मेरा नाम धर्म है और मैं वहाँ जाता हूँ जहाँ शील गया है।''

प्रह्लाद—''परन्तु मुझे यह तो बतलाते जाओ कि तुम क्यों जाते हो। मैंने तुम्हारा त्याग नहीं किया।''

तेज—''हाँ, राजन्! यह ठीक है कि आपने मेरा त्याग नहीं किया, परन्तु मैं शील का बिछोह सहन नहीं कर सकता। मैं उसके बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता, अतः मैं वहाँ जाता हूँ, जहाँ वह गया है।''

इतने वार्तालाप के पश्चात् वह मूर्तिमान् तेज दृष्टि से ओझल हो गया और प्रह्लाद के मन में अंधेरा छा गया।

परन्तु यह क्रम अभी यहीं समाप्त नहीं हुआ, प्रत्युत एक और तेज उसके मुखमण्डल से निकला, जिसने प्रह्लाद के प्रश्न करने पर कहा—''मैं सत्य हूँ और धर्म के बिना नहीं रह सकता।''

ऐसे ही एक और तेज निकला, जिसने अपना नाम व्रत बतलाया।

यहाँ तक कि क्रमशः एक—एक करके सारे तेज निकलते गये। अब तो शक्ति का तेज भी निकल गया। ज्यूँ—ज्यूँ ये तेज निकले जाते थे, त्यूँ—त्यूँ प्रह्लाद की दशा बिगड़ती जाती थी। उसके तेजस्वी मुखमण्डल पर झुर्रियाँ पड़ती जाती थी। उसके राज्य के प्रदेश एक के पश्चात् दूसरा उसके हाथ से निकलते जाते थे।

अन्ततः समस्त तेजों के पश्चात् एक अत्यन्त प्रकाशमान् तेज उसके शरीर से निकला।

प्रह्लाद ने हाथ—पाँव मारे। माथे पर हाथ रखा और निर्बल ध्वनि से कहा—''हे सुन्दरि! तू कहाँ जाती है?''

सुन्दरी—''तुम मुझे अब सुन्दरी मत कहो। मैं अब तुम्हारे पास नहीं ठहर सकती। मेरा नाम श्री—लक्ष्मी है।''

प्रह्लाद—''हे लक्ष्मी! आप यह क्या कर रही हैं। ऐसा अन्धेर क्यों करती हो। तुम सब बारी—बारी कहाँ जाते हो? वह कौन—सा मनुष्य है, जो तुम सबको खेंच रहा है।''

लक्ष्मी—''हे राजन्! अब चिन्ता क्यों करते हो। तुमने अहंकार में आकर अपना शील ब्राह्मण को दे दिया। मैं तुमसे उसी समय पृथक् हो जाती, परन्तु तुम्हारे लिए इतने दिनों ठहरी रही। भला, शील के बिना हम लोग यहाँ कैसे रह सकते हैं? राजन्! संसार में मैं यह भी देखती हूँ कि शीलरहित मनुष्य भी मुझे प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु स्मरण रखो, वे मेरा भोग नहीं कर सकते। वे केवल मेरे रखवाले और चौकीदार होते हैं। वे धन के साँप होते हैं। इससे बढ़कर उनका कोई अधिकार नहीं होता। राजन्! सुनो, मुख ऊपर करो और देखो कि मैं जा रही हूँ।'' लक्ष्मी ने यह कहा और झटपट अदृश्य हो गई। अब लोग प्रह्लाद की दयनीय अवस्था पर आँसू बहाते हैं। उसका मान—सम्मान समाप्त हो चुका है और अब द्वार—द्वार पर भीख माँगता दिखाई देता है।

यह एक काल्पनिक कथा है, जो धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को सुनाई। शील क्या है, जिसके आने से सब—कुछ आ जाता और जिसके चले जाने से सब—कुछ चला जाता है। शील—सदाचार, नैतिकता, सत्य, धर्म— परायणता का ही दूसरा नाम है। जिसके अन्दर ये गुण होंगे, वह सांसारिक प्रत्येक वस्तु को प्राप्त कर लेता है। जिस जाति में ये गुण नहीं, वह जाति मुर्दा है, मरी हुई है। उसकी दशा शीलरहित प्रह्लाद की—सी है। हे मेरी जाति! देख और ध्यानपूर्वक देख कि तेरी अवस्था शीलरहित प्रह्लाद की—सी है या नहीं। यदि ऐसी ही है तो आवश्यकता है कि तू अपने अन्दर शील का संचार कर। तेरे कल्याण का यह मार्ग है।

उपासना की आवश्यकता

—वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

ज्ञान की रक्षा—कर्म की रक्षा

१. मनुष्य चाहे बच्चा हो या बूढ़ा, जब उसके सिर पर कोई प्रहार करता है, तो तत्काल हाथ उठकर सिर पर पहुँच जाता है, रक्षा और मुकाबला करने के लिए।

२. जब भी किसी मनुष्य को सर्दी लगती है, तो टांगे, पांव सुकड़ कर ऊपर को छाती से मिल जाते हैं। तम से प्रकाश की ओर का(Negative से Positive को) अर्थात् रहस्यसिर (मस्तिष्क) ज्ञान का स्थान है। ज्ञान की रक्षा कर्म से हो सकती है। बिना कर्म के ज्ञान सुरक्षित नहीं रह सकता और कर्म की रक्षा, उपासना, भक्ति, प्रभु मिलाप से हो सकती है। बिना उपासना के कर्म भी किसी काम का नहीं होता है।

आनन्द फल, कर्म वृक्ष, ज्ञान बाड़, भक्ति जल

३. जैसे बाहर के भाग की सुरक्षा बाहुओं द्वारा होती है ऐसे मन के विचारों की रक्षा भी भय, लज्जा, शंका से होती है। ये तीन यन्त्र(औजार) या शक्तियाँ हैं, जो परमात्मा देव ने प्रत्येक मनुष्य को अंदर दे रखी हैं। जब तक तो मनुष्य प्रत्येक कर्म के प्रारम्भ में भय, लज्जा, शंका का ध्यान रखता है, तब तक कोई पाप नहीं निकट भटक सकता। जब भी भय जाता है, लज्जा से अलज्ज बन गया, शंका उठी ही नहीं या दब गई तो फिर पाप का भी राज और डेरा जम जाता है।

ज्ञान बाड़ है, भक्ति उपासना जल है, कर्म वृक्ष है, आनन्द उसका फल है, इसलिए आनन्द रूपी फल को प्राप्त करने के लिए कर्म रूपी वृक्ष को बोना चाहिए और भक्ति प्रभु उपासना के जल से सींचना चाहिए। कर्म की जड़ों में भगवद्भक्ति का रस हो, और ज्ञान की बाड़ लगाई जाए, अन्यथ पशु(पाशविक वृत्तियां) एकदम कर्म रूपी वृक्ष को उखाड़ डालेंगी।

तम से प्रकाश—अग्नि संग?

कुछ मास हुए खानपुर(रियासत बहावलपुर) में एक सिन्धी ट्रेन क्लर्क ने प्रश्न किया था कि जब व्यक्ति का दाह कर्म संस्कार होता है तो उसके पांव ऊपर की ओर सिकुड़ते हैं, शेष कोई अंग नहीं सिकुड़ता। यह क्यों? इसका समाधान स्वयं ही इस समय मिल रहा है कि हे द्रष्टा पुरुष! तम से प्रकाश की ओर चलो! तमोवृत्तियों को, जो नीचे हैं—जिनका सम्बन्ध नीचे से है—सुकेड़कर, ऊपर ले चलो अर्थात् Negative से Positive की ओर चलो! पर ऐसा किसके संग से होगा? अग्नि के संग से। जैसे भौतिक अग्नि के संग से पांव ऊपर को दौड़ते हैं, ऐसे ही आत्मिक अग्नि(दैविक) (विद्वान) (दैविक) प्रभु(आत्मिक) के संग से मन के नीचे भाव, मल, विक्षेप, और आत्मा का आवरण सिकुड़कर ऊपर प्रकाश में पहुंच सकता है।

भले आदमी पर कष्ट कैसे

गाड़ी जब आगे चलती है तो ड्राईवर सबसे पहले उसे पीछे को धकेलता है, फिर वह आगे को बढ़ाता है। प्रत्येक स्टेशन पर ऐसा ही

होता है। यही अवस्था मनुष्य की जीवन उन्नति की है। परमात्म देव जिसे आगे ले जाना चाहते हैं उसे जरा पीछे धक्का देते हैं, कोई आड़ विपत्ति डाल देते हैं, जिससे वह मनुष्य सरलता से आगे बढ़ सकता है। जैसे गाड़ी की प्रत्येक स्टेशन पर यही दशा होती है, ऐसे ही मनुष्य की हर मंजिल(भूमिका) से उन्नति पर भी कोई विपत्ति आती है।

जो विद्यार्थी आगे पाठ लेने से पहले, पिछला दोहरा लेता है उसे आगे के पाठ में सुविधा रहती है, अथवा श्रेष्ठ अध्यापक आगे पाठ देते समय पहले पिछला पाठ सुनाता है।

यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्(गीता)

बह्य आचरण को दखने से ही आज कल पद–प्राप्ति हो रही है। जो आदमी संध्या करता है, जप करता है, अग्निहोत्री है, दान करता है, उपकार करता है–उसे लोग धर्मात्मा कह देते हैं। यज्ञ, दान, तप मनुष्य को पवित्र करते हैं–यही मानव जीवन का सार है। पर प्रायः यज्ञ करने वालों और दानियों में तप नहीं होता। उनका जीवन तपोमय संयमी नहीं होता। लोग तो उनको अवश्य धर्मात्मा कहते हैं, वे भी अपने आप को नेक तथा धर्मात्मा समझे हुए होते हैं। वस्तुतः वह उस कसौटी पर कम उतरते हैं–जो धर्मात्माओं के लिए बनाई गई है। धर्म–परायण को ही धर्मात्मा कहते हैं। धर्म का सर्वप्रथम लक्षण धृति है। धृति बस यही कसौटी है। जिसमें धृति के गुण ने प्रवेश नहीं किया, वह सही धर्मात्मा नहीं है। वह क्षणिक–अस्थायी धर्मात्मा है।

धर्म की नींव ही धृति है
बीज की नींव ही धर्म है
जड़ की नींव ही धृति है
गांठ(अंकुर) की नींव ही क्षमा है
तना की नींव ही दम(दमन) है
पत्ते की नींव ही अस्तेय है
पुष्प की नींव ही शौच है
शाखा की नींव ही इन्द्रियनिग्रह है
फल की नींव ही धी है
गूदे की नींव ही विद्या है
रस की नींव ही सत्य है
त्वचा की नींव ही अक्रोध है

उत्तराखण्ड के वैदिक विद्वान

1.	आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य	8630845190
2.	डॉ० अन्नपूर्णा जी	7983091104
3.	आचार्य डॉ० धनंजय जी	9411106104
4.	आचार्य डॉ० सुखदा सोलंकी	9897102599
5.	आचार्य डॉ० नवदीप जी	9897459217
6.	डॉ कृष्णकांत वैदिक शास्त्री	8630135758 9336225967
7.	श्री मनमोहन आर्य	9412985121 8077416082
8.	डॉ० विनय विद्यालंकार	9412042430

उत्तराखण्ड के भजनोपदेशक

9.	पंडित उम्मेद सिंह विशारद	9411512019
10.	पंडित वेद वसु शास्त्री	7906970130 9897027872
11.	पंडित विद्यापति शास्त्री	9837691402

समाचार

गुरुकुल पौंधा में तीन दिवसीय गुरुकुल महोत्सव का सफल आयोजन

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में एक श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद का गठन हुआ है। देहरादून गुरुकुल पौंधा के आचार्य डा. धनंजय आर्य परिषद के अन्य पदाधिकारियों के साथ कार्य कर रहे हैं। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में वैदिक गुरुकुल परिषद की ओर से तीन दिवसीय गुरुकुल महोत्सव का भव्य एवं अपूर्व आयोजन किया गया। दिनांक 8 से 10 नवम्बर, 2019 तक आयोजित इस कार्यक्रम में 56 गुरुकुलों के 400 से अधिक छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इस अवसर पर वेदमन्त्र–अन्त्याक्षरी, पाणिनी–अष्टाध्यायी– कण्ठ–पाठ, धातुकोश–कण्ठ–पाठ, श्लाका–प्रतियोगिता, वर्णोच्चारण–शिक्षा–शोध– गोष्ठी, कबड्डी सहित लगभग 11 शास्त्रीय प्रतियोगिताओं के आयोजन सहित तीनों दिन वृहद यज्ञ, प्रथम दिवस ध्वजारोहण, प्रथम दिवस उद्घाटन समारोह, विद्वत–सम्मान–समारोह तथा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। वैदिक गुरुकुल परिषद से सम्प्रति 219 गुरुकुल जुड चुके हैं। आगामी गुरुकुल महोत्सव गुरुकुल आमसेना, उड़ीसा में आयोजित किया जायेगा जिसकी तिथियां बाद में घोषित की जायेंगी।

दिनांक 8 से 10 नवम्बर, 2019 तक अयोजित गुरुकुल महोत्सव में देश के सभी प्रमुख आर्य गुरुकुलों ने भाग लिया। इन गुरुकुलों के प्रमुख आचार्य भी उत्सव में पधारे थे। अनेक आर्य विद्वान एवं नेता भी महोत्सव में पधारे जिनमें स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी सहित डा. सोमदेव शास्त्री, डा. रघुवीर वेदालंकार, ठाकुर विक्रम सिंह, श्री धर्मपाल शास्त्री, स्वामी आर्यवेश, श्री विट्ठल राव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रूपकिशोर शास्त्री, उत्तराखण्ड संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री गिरीश अवस्थी, श्री वत्स शास्त्री, आचार्या डा. सुकामा जी, आचार्या डा. सुमेधा जी, आचार्य उदयन मीमांसक, आचार्य ओम् प्रकाश जी आदि सम्मिलित थे। गुरुकुल पौन्धा के आचार्य डा. धनंजय आर्य तथा उनके पूर्व स्नातकों सहित गुरुकुल के छात्रों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में एक माह से अधिक समय से रात–दिन अथक प्रयास किये। आचार्य धनंजय जी थकान आदि कारणों से अस्वस्थ भी हुवे तथापि कार्यक्रम आशा के अनुरूप सफल रहा। आयोजन में मानव सेवा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

द्वारा आर्यजगत के 11 आचार्य, आचार्याओं एवं विद्वानों का शाल, अभिनन्दन–पत्र, सम्मान–राशि आदि देकर अभिनन्दन किया गया। गुरुकुल महोत्सव से सभी गुरुकुलों के आचार्य–आचार्याओं तथा छात्र–छात्राओं में नया उत्साह देखने को मिला। प्रतियोगिताओं में अनेक नये कीर्तिमान स्थापित हुए। गुरुकुल महोत्सव पूर्णतः सफल रहा।

समाचार

गुरुकुल उत्सव में आर्य लेखक श्री मनमोहन आर्य का अभिनन्दन

श्रीमद् दयानन्द ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौंधा–देहरादून में दिनांक 8 से 10 नवम्बर, 2019 तक तीन दिवसीय गुरुकुल महोत्सव का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर मानव सेवा संस्थान, दिल्ली की ओर से एक विद्वत सम्मान समारोह का आयोजन भी सम्पन्न हुआ। इस समारोह आर्यजगत की 12 विदुषियों, विद्वानों वा कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। सम्मानित किये गये विद्वानों में एक नाम देहरादून के आर्य लेखक श्री मनमोहन कुमार आर्य का भी है। श्री आर्य वैदिक साधन आश्रम तपोवन की मासिक पत्रिका के सम्पादक भी हैं। आश्रम श्री आर्य को इस सम्मान के लिये बधाई देता है। आश्रम मानव सेवा संस्थान, दिल्ली की उनके इस शुभ कार्य के लिये प्रशंसा करता है और उनको धन्यवाद देता है।

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**श्री अशोक वर्मा**	**ई० प्रेम प्रकाश शर्मा**
अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	सचिव
09710033799	09412058879	09412051586

मिरगी की अनुभूत दवाएं

अम्बिकेश्वरपति त्रिपाठी ''पत्रकार'' अयोध्या

मीठी बच को 1 छटांक लावे और उसको अच्छी तरह से कूट डाले, फिर कपड़छान कर रोज चार आनाभर सुबह–शाम को शुद्ध मधु(शहद) के साथ चाटे। इसको करीब–करीब 15 दिन तक चाटना चाहिए। जहां तक उम्मीद की जाती है कि यह रोग इतने दिनों में अच्छा हो जाएगा। अगर नहीं अच्छा हो तो एक माह तक सेवन कराइये। इतने दिन में मिरगी अवश्य अच्छी हो जाएगी। भोजन में सिर्फ दूध–भात खिलाना चाहिये। ज्यादा–से–ज्यादा फल खिलाया जा सकता है।

दूध गाय का हो तो सर्वोत्तम है। मीठी बच पंसारी के यहाँ मिलती है तथा मीठी होती है। खुराक बड़ों के लिये दो आनेभर सुबह तथा दो आनेभर शाम को दी जाय। छोटे बच्चों को उम्र के अनुसार एक आना या दो पैसाभर दिया जाय, शहद में मिलाकर।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची दिनांक 31 अप्रैल 2019 से 31 नवम्बर 2019 तक

क्र.स.	नाम	धनराशि	क्र.स.	नाम	धनराशि
1	श्री महेन्द्र सिंह, दिल्ली	2500	39	श्री रामभज मदान जी, नई दिल्ली	100000
2	श्री धर्मवीर जी, भिवानी	3100	40	श्री संजय कुमार जी, देहरादून	1100
3	श्री अशोक कुमार जी, दिल्ली	1500	41	श्री श्याम आर्य जी, पानीपत	2000
4	श्री मनोज गुप्ता जी, बीकानेर	1000	42	श्री उमेश जी, लुधियाणा	1100
5	श्री धर्मवीर जी, जींद	1000	43	जन कल्याण ट्रस्ट, नई दिल्ली	20000
6	श्री विपिन जी, सहारनपुर	1000	44	अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली	30000
7	श्री रामवीर सिंह जी, सोनीपत	2100	45	श्री दर्शन कुमार कुकरेजा जी, दिल्ली	50000
8	आचार्य हेमेन्द्र जी, दिल्ली	1100	46	श्री राजेश्वर दयाल आर्य	2100
9	श्री विजय कुमार जी, जलांधर	3100	47	श्री गणेश रोलर फ्लोर मिल्स, दे0दून	21000
10	गुरुकुल विद्यापीठ कुम्भा खेड़ा	2100	48	स्व0 श्री जगदीश चन्द्रजनजेवा जी, दे.दू.	2000
11	डा0 सुमन शारदा जी, लुधियाणा	3100	49	श्री एकाक्ष जनजेवा जी, दे0दू0	1000
12	डा0 ज्योति जी, पोंटा साहिब	2000	50	तनीशी जनजेवा जी, दे0दू0	1000
13	आशा आर्या जी, मोतीहारी	2100	51	श्रीमती रश्मि यति जी, दिल्ली	1100
14	ज्योति पुंडीर जी, देहरादून	2000	52	श्री केवल राम कुकरेजा जी, करनाल	1000
15	श्रीमती निर्मल मदान जी, दिल्ली	1100	53	श्रीमती सुरेन्द्र अरोडा जी, देहरादून	5000
16	श्रीमती सुनीता जी, करनाल	5000	54	श्री अश्विन बब्बर जी, तपोवन	2100
17	माता फूलवती जी, रोहतक	1000	55	श्री निर्मल श्रीधर जी, फरीदाबाद	5100
18	श्रीमती प्रीती पाहवा जी, दिल्ली	1100	56	आर्य वस्तु भण्डार, देहरादून	1100
19	श्री गोपालकृष्ण अरोड़ा जी, दिल्ली	5100	57	श्री ओमप्रकाश पॉलीवाल जी, तपोवन	8000
20	श्री ओमप्रकाश अरोड़ा जी, जालन्धर	1100	58	माता नरेन्द्र बब्बर जी, तपोवन	5100
21	श्रीमती धर्म देवी जी, नई दिल्ली	2000	59	श्री सुनील कुमार भाटिया, गाजियाबाद	1100
22	श्री जब्बर सिंह आर्य जी, जंघेडी	2100	60	श्री सुनील अंनंत जी, देहरादून	2100
23	श्रीमती संगीता बिज जी, गुडगाँव	2000	61	श्रीमती सुधा उपाध्याय जी, देहरादून	2100
24	श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली	1100	62	श्री रामभज मदान जी, नई दिल्ली	3100
25	श्रीमती परेश पटेल जी, मुंबई	5000	63	श्री चन्द्रगुप्त विक्रम जी, देहरादून	2100
26	श्री शुभम अग्रवाल जी, देहरादून	3100	64	ओम पेन्टस एण्ड हार्डवेयर स्टोर जगाधरी	1100
27	श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी, ज्वालापुर	5000	65	स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, देहरादून	25000
28	श्रीमती वीना गौतम जी, दिल्ली	2000	66	श्री दलबीर आर्य जी, हरियाणा	1100
29	श्रीमती अरुणा जी, मुम्बई	3000	67	श्री विमन्यू गुप्ता, आगरा	1100
30	श्री जय किरण आर्य जी, बैंगलूरु	5100	68	श्रीमती सुषमा जी, दिल्ली	1000
31	श्रीमती पद्मजा जी, कोलापुर	2000	69	श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली	2100
32	श्रीमती गायत्री गायकवाड़ जी, लातूर	2000	70	श्री जय भगवान शर्मा, देहरादून	1000
33	श्रीमती सरोजबाला आर्या जी, सोनीपत	2100	71	श्रीमती मधु जी, दिल्ली	2100
34	श्रीमती विमला जी, देहरादून	1100	72	व्यास आश्रम ट्रस्ट, हरिद्वार	5100
35	श्रीमती आभा सूदन जी, हरिद्वार	21000	73	श्रीमती सरोजयति जी, मुरादाबाद	1000
36	श्रीमती राखी डंग जी, पंजाब	3100	74	श्री ओ0पी0 महेन्द्रु, देहरादून	1100
37	श्री प्रभुदत्तनन्द लाल जी, मारीशस	23100	75	श्री देव प्रकाश जी, दिल्ली	2100
38	श्रीमती शैलकुमारी त्रिपाठी, हरिद्वार	1000	76	माता द्रोपदी जी, हरिद्वार	2000

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची दिनांक 31 अप्रैल 2019 से 31 नवम्बर 2019 तक

क्र.स.	नाम	धनराशि
77	श्री आर्यन जी, दिल्ली	2100
78	श्री विनय प्राणाचार्य जी, गोरखपुर	1100
79	श्री अभिषेक रस्तोगी, नई दिल्ली	1000
80	श्री एस0के0 अम्बा जी, दिल्ली	10000
81	श्री अनिल मदान जी, नई दिल्ली	7100
82	श्री अमित गोयल जी, देहरादून	5100
83	श्री सुरेन्द्र मास्टर, हरियाणा	5100
84	श्रीमती सुरेन्द्र अरोडा जी, देहरादून	5000
85	श्रीमती संगीता कुमार जी, हैदराबाद	5000
86	डा0 कृष्ण लाल जी डंग, पौंटा साहिब	5000
87	श्री प्रवेन्द्र दहिया, मुजफ्फरनगर	2500
88	कु0 वंशा आर्या, देहरादून	1200
89	कु0 आकांक्षा चौहान, देहरादून	2100
90	श्री कुलदीप सिंह चौहान जी, देहरादून	1100
91	श्री जबर सिंह, जंदेहड़ी	2100
92	श्रीमती उर्मिला वीरांगना जी, सोनीपत	1100
93	श्रीमती धर्म देवी जी, नई दिल्ली	1000
94	श्री कृष्णपाल जी, तपोवन	1000
95	कु0 कलावती पालीवाल, तपोवन	1100
96	श्रीमती सरला आर्या जी, पौंटा साहिब	1000
97	श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली	1100
98	श्री नवीन मलिक जी, सहारनुपर	1000
99	सारिका आर्या जी, सहारनपुर	4000
100	कु0 अदिति तोमर जी, देहरादून	1000
101	श्री प्रदीप कुमार मिश्रा, देहरादून	1000
102	श्रीमती राजेश्वरी आर्या जी, सहारनपुर	1100
103	डा0 ज्योति जी, पोंटा साहिब	1100
104	श्रीमती अनिता घई जी, नई दिल्ली	115000
105	वेद कुमारी वाधवा जी, नई दिल्ली	1100
106	श्री जब्बर सिंह आर्य जी, सहारनपुर	2100
107	श्री जे0एस0 सामन्त, हल्द्वानी	5100
108	श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा जी, गुडगाँव	1100
109	डा0 आजाद, सुरेन्द्र एवं मधु,	2100
110	श्रीमती स्नेहलता गोगिया, देहरादून	2000
111	सीता राम जिंदल फाउण्डेसन, दिल्ली	15000
112	श्री महेन्द्र सिंह चौहान जी, देहरादून	5100
113	श्री वेद अरोड़ा जी, देहरादून	1000
114	श्री अरूण बब्बर जी, गुरूग्राम	2000
115	श्रीमती सुरेन्द्र अरोडा जी, देहरादून	5000
116	श्री जैराम जी आर्य, अलवर	2500
117	बलभद्र खलंगा समिति, देहरादून	2000
118	कृष्णा सहगल जी, दिल्ली	1100
119	श्री युधिष्ठर सिंह जी, पानीपत	1000
120	श्री मुकेश जी, देहरादून	2100
121	डा0 सत्यदेव सिंह जी, मथुरा	5000
122	श्री ओम प्रकाश मस्करा जी, कोलकाता	1100
123	दिव्या बब्बर जी, गुडगांव हरियाणा	5000
124	श्रीमती सुरेन्द्र अरोडा जी, देहरादून	5000
125	श्रीमती कैलाश मारवाह जी, दिल्ली	12000
126	श्रीमती नन्दिता चन्देल जी, देहरादून	2100
127	श्रीमती कुसुम रस्तोगी जी, नई दिल्ली	6000
128	श्री विश्वबन्धु जी, मोदी नगर	1000
129	श्री जगदीश पालीवाल जी, तपोवन	1100
130	श्रीमती धर्म देवी जी, नई दिल्ली	1000
131	श्री सत्यपाल जी गांधी, दिल्ली	2100
132	श्रीमती उर्मिला कपूर जी, देहरादून	1100
133	श्री यशपाल वालिया जी, पंजाब	2100
134	श्री अशोक वर्मा जी, देहरादून	1500
135	श्री ब्रह्ममुनि जी, अलवर	1100
136	श्री इन्द्रजीत एवं प्रेमलता आर्य जी, हरियाणा	6000
137	श्रीमती इन्द्रा अरोड़ा जी, नोयडा	1100
138	श्री इन्द्रजीत एवं प्रेमलता आर्य जी, हरियाणा	1100
139	श्री इन्द्रजीत मल्होत्रा जी, देहरादून	6000
140	आर्य वस्तु भण्डार, देहरादून, देहरादून	3100
141	श्री कुल्दीप सिंह जी एडवोकेट, देहरादून	1000
142	श्रीमती सुरेन्द्र अरोडा जी, देहरादून	5000
143	माता नरेन्द्र बब्बर जी, तपोवन देहरादून	6000
144	माता सत्यावती नांदल, तपोवन देहरादून	6000
145	माता धवन जी, तपोवन देहरादून	6000
146	श्री राकेश तनेजा एवं प्रभा तनेजा जी, देहरादून	1100
147	श्री राधेश्याम जोशी जी, देहरादून	1100

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची दिनांक 31 अप्रैल 2019 से 31 नवम्बर 2019 तक

क्र.स.	नाम	धनराशि
148	श्री ज्ञान चन्द अरोड़ा जी, तपोवन देहरादून	6000
149	श्रीमती शान्ति आर्य, रस्तोगी, दिल्ली	1100
150	श्रीमती सुरेन्द्र अरोडा जी, देहरादून	2100
151	श्री महेश चन्द्र एवं दिनेश सिंघल जी, आगरा	6000
152	श्रीमती ईश आहूजा जी, देहरादून	1000
153	श्री अशोक कुमार वर्मा, देहरादून	5100
154	श्रीमती कृष्णा सेठी जी, हरियाणा	1100
155	रमेश टांगडी जी, सुदेश टांगडी जी, देहरादून	3000
156	श्री डी0आर खट्टर जी, देहरादून	1100
157	श्री रामभज मदान जी, नई दिल्ली	51000
158	श्री केवल सिंह आर्य जी, पानीपत	1100
159	सुश्री अद्विका माथुर जी, गाजियाबाद	5100
160	सुश्री निधि माथुर जी, गाजियाबाद	5100
161	श्री अनमोल घई जी, सहारनपुर	5100
162	श्रीमती सुप्रिया घई जी, सहारनपुर	5100
163	श्रीमती सुषमा सचदेवा जी, देहरादून	5100
164	श्री धीरेन्द्र सचदेवा जी, देहरादून	2100
165	श्री ओंकार चौधरी जी, देहरादून	2100
166	श्री रणजीत राय कपूर जी, देहरादून	1100
167	श्री ओम प्रकाश पालीवाल जी, आगरा	11000
168	माता लीलावती जी, तपोवन देहरादून	1100
169	श्री रामपाल सिंह जी, गौतम बुद्ध नगर	1500
170	पं सूरत राम शर्मा जी, तपोवन देहरादून	1100
171	श्री छककनलाल एवं सत्यवन्ती जी, हरिद्वार	2500
172	श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली	1100
173	श्रीमती धर्म देवी जी, नई दिल्ली	1100
174	श्री जितेन्द्र सिंह तोमर, देहरादून	1111
175	श्रीमती इन्द्रा आहूजा जी, दिल्ली	6000
176	श्री राजेन्द्र छाबड़ा जी, रोहतक	1100
177	श्रीमती कृष्णा गोगिया जी, दिल्ली	1100
178	श्रीमती जीवनी सिंघल जी, दिल्ली	1100
179	श्रीमती मुर्ति देवी, सहारनपुर	1100
180	श्रीमती रेणु शाह, देहरादून	1000
181	माता नरेन्द्र बब्बर जी, तपोवन देहरादून	2500
182	श्री केशर सिंह जी, तपोवन देहरादून	1100
183	श्री पन्चीराम जिनाटा जी, देहरादून	1000
184	श्री रतन सिंह मोकटा, हिमाचल प्रदेश	1100
185	मास्टर सुरेन्द्र सिंह, हलदौर	2000
186	श्रीमती सुशीला देवी, हलदौर	1000
187	श्री जय प्रकाश जी, देहरादून	2100
188	श्री रमन कुमार जी, देहरादून	1100
189	श्री नवीन कुमार अरोड़ा, दिल्ली	1100
190	श्री संतोष जी, दिल्ली	1000
191	श्री राजकुमार भण्डारी, देहरादून	10000
192	आर्य समाज अधोईवाला	5000
193	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी, देहरादून	2000
194	श्री मूलशंकर सिक्का जी, दिल्ली	1100
195	डिलाइट नावेल्टी, नई दिल्ली	21000
196	श्री संतोष क्षेत्रपाल जी, दिल्ली	5000
197	श्री दीपचन्द विजय कुमार जी, कीरतपुर	10000
198	श्री अमृतपाल जी, दिल्ली	5000
199	श्री वेद प्रकाश ओबराय, दिल्ली	5000
200	श्री शोभा महेन्द्र जी, ऋषिनगर	5000
201	श्री रविन्द्र गुप्ता जी, दिल्ली	5000
202	श्री राजेश भाटिया जी, चंड़ीगढ	1100
203	श्रीमती मंजु गुप्ता जी, आगरा	2100
204	श्रीमती उषा जी, अ़गरा	2100
205	श्रीमती विद्या रानी जी, आगरा	1100
206	श्रीमती शोभा जी, आगरा	1100
207	श्री रमन कुमार जी, विकासनगर	1100
208	श्री राम प्रसाद वेदालंकार न्यास, ज्वालापुर	2100
209	आचार्य सत्यपाल सिंह जी, दिल्ली	2100

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

freedom to work...

Delite Kom Limited

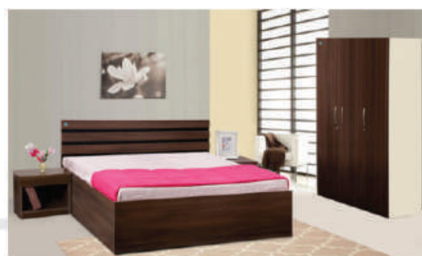

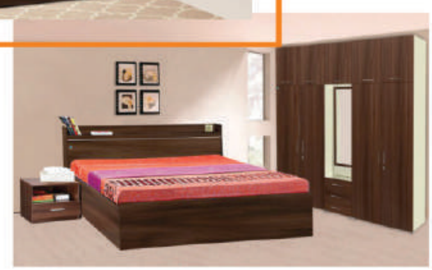

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DELITE KOM LIMITED

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 **Fax :** 23620502 **Email :** delite@delitekom.com

ISO 9001 DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उदयोगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।
संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com